आज़ादी का अमृत महोत्सव

60

गौरवपूर्ण स्थापना वर्ष

मॉयल MOIL

मॉयल भारती

अंक:7 (अप्रैल–सितंबर 2022)

मॉयल लिमिटेड, मॉयल भवन 1–ए,
काटोल रोड, नागपुर–440013

भारत सरकार
इस्पात मंत्रालय
वर्ष 2018-19 के दौरान
राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए
'इस्पात राजभाषा सम्मान'
(तृतीय पुरस्कार)
मॉयल लिमिटेड
नागपुर
को प्रदत्त

भारत सरकार
इस्पात मंत्रालय
वर्ष 2019-20 के दौरान
राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए
'इस्पात राजभाषा सम्मान'
(तृतीय पुरस्कार)
मॉयल लिमिटेड
नागपुर
को प्रदत्त

भारत सरकार
इस्पात मंत्रालय
प्रशस्ति-पत्र
इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों में वर्ष 2018-19 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में 'तृतीय स्थान' प्राप्त करने पर मॉयल लिमिटेड, नागपुर को 'इस्पात राजभाषा सम्मान' से सम्मानित किया जाता है।

भारत सरकार
इस्पात मंत्रालय
प्रशस्ति-पत्र
इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों में वर्ष 2019-20 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में 'तृतीय स्थान' प्राप्त करने पर मॉयल लिमिटेड, नागपुर को 'इस्पात राजभाषा सम्मान' से सम्मानित किया जाता है।

संपादक मंडल

मुकुंद पी. चौधरी	उषा सिंह	एन. डी. पाण्डेय	पूजा वर्मा
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक	निदेशक (मानव संसाधन)	कंपनी सचिव	राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

प्रिय पाठकगण!

सप्रेम नमस्कार! मॉयल भारती का सातवाँ अंक आप तक पहुँचाते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है। राजभाषा के प्रचार–प्रसार के जिस उद्देश्य से मॉयल भारती के प्रकाशन का बीड़ा उठाया गया था वह सभी की सृजनात्मक सहयोग से सुफल रहा। अपनी छोटी सी यात्रा में ही पत्रिका को भरपूर प्यार और सहयोग प्राप्त हुआ इसके लिए मैं सभी संबंधित पक्ष की कृतज्ञ हूँ। पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, कंपनी भी अपने 60 वर्ष का स्वर्णिम कार्यकाल पूरा कर रही है। मॉयल लिमिटेड देश के विकास में भागीदार रहा है और आज भी अपनी पूरी क्षमता से राष्ट्रसेवा में समर्पित है। राष्ट्र की वाणी के रूप में मान्य राजभाषा हिंदी का कार्य भी कंपनी में पूरी तत्परता और समर्पण के साथ किया जाता है।

इस अंक में कंपनी की ऐतिहासिक झलक के साथ–साथ दो महत्वपूर्ण राज्यों में फैली विस्तृत खनन गुहाओं का भी जिक्र है। मैंगनीज खनन, उत्पादन, विपणन एवं उपयोग जैसे बिषयों पर भी चर्चा की गयी है। अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक महोदय का मार्गदर्शन एवं इस अंक के प्रति उनका सहयोग हमारे संपादक मंडल की ऊर्जा का स्रोत है। पत्रिका को हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्यों के आलेखों को भी संकलित कर पाने का सौभाग्य मिला जिससे प्रकाशित सामग्री की रोचकता एवं गुणवत्ता दोनों में ही वृद्धि हुई है। अन्य विद्वान अतिथि लेखकों की रचनाओं ने भी पत्रिका को समृद्ध बनाया है। प्रासंगिक कविताओं, लेखों एवं कहानियों से यह अंक भी पठनीय बन गया है। हमारी कंपनी के कर्मठ कार्मिक और सुप्रसिद्ध कवि श्री दिनेश कनोजे 'देहाती' जी ने अपनी कविता 'मॉयल का गौरवगान' से इस 60वें स्थापना वर्ष के अवसर पर प्रकाशित हो रहे इस 7वें अंक को श्रेष्ठता प्रदान की है। इसलिए मैं पुनः सभी रचनाकारों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

मुझे विश्वास है कि आपको भी पत्रिका के अंकों का बेसब्री से इंतजार रहा होगा, हमें भी आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा तो आइये इस सातवें अंक की यात्रा का शुभारंभ करते हैं। धन्यवाद...!

जय हिंद! जय हिंदी!!

(पूजा वर्मा)
संपादक–मॉयल भारती

अनुक्रमणिका

संपादकीय.....01
संदेश.....03–08
वार्षिक कार्यक्रम.....09
मॉयल लिमिटेड : एक सिंहावलोकन.....10–12
मनसर/परसोडा खान.....13
कान्द्री खान.....14
बेलडोंगरी खान.....15
चिखला खान.....16
गुमगांव खान.....17
डोंगरी बुजुर्ग खान.....18
बालाघाट खान.....19
तिरोडी खान.....20
सितापटोर खान.....21
उकवा खान.....22
भारत में मैंगनीज अयस्क उद्योग का विकास.....23
पेपर कटिंग.....24
राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख अनुदेश.....25–26
माननीय हिंदी सलाहकार समिति की बैठक.....27
मॉयल के खदानों को आठ राष्ट्रीय सुरक्षा पुरस्कार.....28
राजभाषा नीति और उसका प्रबंधन.....29–30
राजभाषा संकल्प, 1968.....31
अनुवाद : अर्थ एवं महत्व के क्षेत्र.....32
पदनाम/टिप्पणियाँ.....33–34
हिंदी काव्य गोष्टी/हिंदी दिवस पर कविता.....35–36
सफलता दौड़ नहीं, एक यात्रा है/मेहनत एवं लगन.....37–38
माखनचोर बालकृष्ण.....39–41
सेहतमंद/एकता का नारा.....42
दुर्याधन अभी जिंदा है/दर्द कितने बिलबिलाए.....43
खोल गठरी प्यार की/कोई तो मन खोले.....44
सुख पाने की जिज्ञासा में.....45
जान है तो जहान है.....46
पर्यावरण बचाओ, दुनिया बचाओ.....47
विरूद्ध.....48
जल/बधाई.....49–50
पछतावा.....51–52
मानव संसाधनःवर्तमान अवधारणा/माता–पिता.....253–54
महिलाए खुद को देंगी वक्त तो जिंदगी होगी बेहतर.....55–56
समाज में महिलाओं की भूमिका.....57
चित्रावली.....58–59
मॉयल का गौरवगान.....60

सब लोग अपनी–अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए हिंदी को साधारण भाषा के रूप में पढ़ें। – महर्षि अरविन्द

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए कामटोल रोड,
नागपुर-440013

संदेश

मुकुंद पी. चौधरी
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

प्रिय साथियों,

आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 60 वां स्थापना दिवस की बहुत– बहुत बधाई देता हूँ।

मुझे आप सभी के साथ यह साझा करते हुये खुशी हो रही है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा विभाग की पत्रिका 'मॉयल भारती' को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति नागपुर द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

हिंदी भाषा भारत जैसे बहुभाषी देश को एकता और अखंडता के सूत्र में बांधकर रखती है। हिंदी बहुत सरल व लचीली भाषा है। हिंदी के गुण और महत्व को ध्यान में रखते हुए इसे भारतीय संविधान में संघ सरकार की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने तथा केंद्र सरकार के कार्मिकों को हिंदी में सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करने में पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। मुझे आशा है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा अनुभाग द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार व प्रोत्साहन की दिशा में किए जा रहे प्रयास भविष्य में भी इसी प्रकार जारी रहेंगे।

मैं पत्रिका के सातवें अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिको का अभिनंदन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

(मुकुंद पी. चौधरी)

संदेश

राकेश तुमाने
निदेशक (वित्त)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

प्रिय साथियों,

आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 60वां स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

हमारे देश में हिंदी भी एक अहम भूमिका है जिसके प्रसार के लिए निरंतर प्रयास करना हम सभी का सामूहिक दायित्व है। हिंदी जोड़ने की भाषा है क्योकि यह मात्र विचारों के आदान–प्रदान तक ही सीमित नहीं है। यह हमारी संस्कृति, विरासत ज्ञान और संस्कार को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य भी करती है। हमारा देश विभिन्न भाषाओं और संस्कृतिक विविधताओं से समृद्ध है । इन भाषायी विविधताओं के मध्य में हिंदी सेतु के रूप में एक सशक्त संयोजक का कार्य करती आ रही है।

मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मॉयल लिमिटेड की पत्रिका "मॉयल भारती" का यह सातवाँ अंक आपके सामने प्रस्तुत है। पत्रिका के लेखकों का योगदान सराहनीय है, जो हिंदी के गौरव का प्रसार कर रहे है। मैं मॉयल भारती के निरंतर समृद्धशाली होने की कामना करता हूँ।

(राकेश तुमाने)

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए कांटोल रोड,
नागपुर-440013

संदेश

उषा सिंह
निदेशक (मानव संसाधन)

प्रिय हिन्दी प्रेमियों !

आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 60वां स्थापना दिवस की बहुत–बहुत बधाई!!

मॉयल लिमिटेड ने अपनी यात्रा की शुरुवात सीपीएमओ के हस्तांतरण से की थी और आज अनुसूची ए मिनी श्रेणी –1 की कंपनी है। अपने साठ वर्ष की यात्रा में कंपनी ने बहुत सारी सफलताएं हासिल की है, और आगे भी नई ऊंचाइयों को छुने के लिए मॉयल ने कई योजनायें बनाई है, जिस पर अमल करने के लिए हम सभी तैयार है।

राजभाषा की दिशा में भी यह प्रसन्नता का विषय है कि मॉयल भारती' पत्रिका के प्रकाशन के 3 वर्ष पूर्ण हो चुके है। इस छोटी सी यात्रा में पत्रिका को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा भी सराहा जा रहा है।

भाषा मानव सभ्यता के विकास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भाषा हम सभी के विचारों, चिंतन, आवश्यकताओं एवं भावों को शब्दों मे परिवर्तित करने का श्रेष्ठ साधन है जो मनुष्य के सामाजिक जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

'मॉयल भारती' के सातवें अंक को सफल बनाने हेतु सभी लेखक धन्यवाद के पात्र है मैं उनसे आशा करती हूँ कि वे भविष्य में भी पत्रिका के आगामी अंकों में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहेंगे।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल, इसमें प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों एवं प्रकाशन से संबद्ध कर्मियों के साथ–साथ सुधी पाठकों को भी हार्दिक बधाई देती हूँ।

उषा सिंह

(उषा सिंह)

संदेश

पी.व्ही.व्ही. पटनायक
निदेशक (वाणिज्य)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

प्रिय साथियों,

मॉयल लिमिटेड के 60वां स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

देश की संपर्क भाषा के रूप में भारत की अधिक से अधिक लोगो द्वारा बोली व समझी जाने वाली हिन्दी भाषा का अधिक महत्व है। भाषा एक राष्ट्र की पहचान है और राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार–प्रसार में कार्यालयीन पत्रिकाओं की भूमिका प्रशंसनीय है। 'मॉयल भारती' पत्रिका के प्रकाशन में कार्यालय के हिन्दी एवं हिंदीतर भाषी पदाधिकारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मैं पत्रिका के सातवें अंक के लिए बधाई देता हूँ, और 'मॉयल भारती' निरंतर लोकप्रियता एवं उपयोगिता की सीढ़ियाँ चढ़ती रहे, ऐसी कामना करता हूँ।

(पी.व्ही.व्ही. पटनायक)

मॉयल लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
मॉयल भवन, 1ए काटोल रोड,
नागपुर-440013

संदेश

एम. एम. अब्दुल्ला
निदेशक (उत्पादन एवं योजना)
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

प्रिय साथियों,

मॉयल लिमिटेड के 60वां स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है मॉयल लिमिटेड के राजभाषा अनुभाग द्वारा राजभाषा पत्रिका 'मॉयल भारती' का निरंतर प्रकाशन किया जा रहा है। भारत जैसे विशाल देश में हिंदी अन्य भारतीय भाषाओ के साथ समन्वय करती हुई भारतीय संस्कृति को पल्लवित कर रही है। हिंदी जितनी व्यापक व सुदृढ़ होगी देश की आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक स्थिति उतनी समृद्ध होगी।

मैं राजभाषा पत्रिका 'मॉयल भारती' के नवीन अंक के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं रचनाकारों को बधाई देता हूँ।

(एम एम अब्दुल्ला)

संदेश

प्रदीप कामले
मुख्य सतर्कता अधिकारी
मॉयल लिमिटेड, नागपुर

प्रिय साथियों,

आप सभी को मॉयल लिमिटेड के 60 वे स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

मेरे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि मॉयल लिमिटेड के राजभाषा अनुभाग की पत्रिका "मॉयल भारती" का सातवाँ अंक आपके हाथ में है। भाषा राष्ट्रीय एकता का आधार है, जो हमे देश की गौरवशाली संस्कृति से परिचित करवाती है। भाषा हमारे जीवन का आधार एवं साहित्य समाज का आईना है। हिंदी किसी देश या संप्रदाय की भाषा नहीं है। इससे देश की अंतरात्मा सहज रूप से अभिव्यक्त है। राजभाषा पत्रिका मॉयल भारती का प्रकाशन कार्मिकों में चिंतन, अनुभव, विचार व भावनाओं को व्यक्त करने का साझा मंच प्रदान करता है।

मैं मॉयल भारती के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएं देता हूँ तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(प्रदीप कामले)

कार्यालयीन काम-काज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.स.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मुल पत्राचार (तार बेतार, टेलेक्स, फैक्स, ई–मेल आदी सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख 100% क्षेत्र के राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख 90% क्षेत्र के राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख 85% क्षेत्र के राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति को

2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पणी	75%	50%	30%
4.	हिंदी टंकक, आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
5.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वंय अथवा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
6.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपिक)	100%	100%	100%
7.	द्विभाषी प्रशिक्षण समाग्री तैयार करना	100%	100%	100%
8.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोडकर, पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रिय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर खर्च की गई राशि सहित हिंदी पुस्तको आदि की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
9.	कंप्युटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रानिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
10	वेबसाइट	100% द्विभाषी	100% द्विभाषी	100% द्विभाषी
11	नगरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डो आदि का प्रदर्शन	100% द्विभाषी	100% द्विभाषी	100% द्विभाषी
12	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% न्युनतम	25% न्युनतम	25% न्युनतम
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% न्युनतम	25% न्युनतम	25% न्युनतम
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधिन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
13 (क) (ख) (ग)	राजभाषा संबंधी बैठकें हिंदी सलाहकार समिति नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (कम से कम) वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
14	कोड, मेनुअल, फॉर्म, प्रकिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		
15	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहॉ संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	"क" क्षेत्र 40%	"ख" क्षेत्र 30% (न्यूनतम अनुभाग)	"ग" क्षेत्र 20%
	सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहॉ अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्यक्षेत्र का 40% , "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।			

मॉयल लिमिटेड : एक सिंहावलोकन

मॉयल लिमिटेड भारत की सरकारी नियंत्रण वाली खनन कंपनी है जिसे मिनिरत्न होने का गौरव प्राप्त है। वर्ष 2022 तक कंपनी ने अपनी गौरवशाली यात्रा के 60 वर्ष पूरे कर लिए हैं। इन 6 दशकों से अधिक के कालखण्ड में कंपनी ने महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। कंपनी की प्रशासनिक व्यवस्था, मानव संसाधन संबंधी नवाचार, कार्मिकों क लिए सुविधापूर्ण वातावरण का निर्माण, खदानों का विस्तार, नई तकनीकी का इस्तेमाल, राजस्व में निरंतर वृद्धि एवं सामाजिक दायित्व का समुचित निर्वहन इत्यादि के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं। इन 6 दशकों का समय कंपनी के कायापलट का समय रहा है जिसको हम एक संक्षिप्त विश्लेषण से समझ सकते हैं।

कंपनी का इतिहास : मॉयल को मूल रूप से वर्ष 1896 में सेंट्रल प्रोस्पेक्टिंग सिंडिकेट के रूप में स्थापित किया गया था, जिसे बाद में सेंट्रल प्रोविंस मैंगनीज अयस्क कंपनी लिमिटेड (सीपीएमओ) के रूप में बदल दिया गया जो एक ब्रिटिश कंपनी थी और ब्रिटेन में निगमित हुई थी। 1962 में, भारत सरकार और सीपीएमओ के बीच एक समझौते के परिणामस्वरूप, सरकार द्वारा बाद की परिसंपत्तियों को ले लिया गया और सरकार के बीच 51% पूँजी के साथ मॉयल का गठन किया गया। भारत सरकार और महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की सरकारें और शेष सीपीएमओ द्वारा 49% यह 1977 में था, शेष 49% शेयरधारिता सीपीएमओ से प्राप्त की गई थी और मॉयल इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में 100% सरकारी कंपनी बन गई थी। कंपनी के सेंट्रल प्रोस्पेक्टिंग सिंडिकेट से मॉयल लिमिटेड बनने तक के सफर में कई उतार–चढ़ाव रहे हैं। यद्यपि केवल कंपनी के खनन कार्य को ही गणना में रखें तो कंपनी का खनन पिछले 125 से भी अधिक वर्षों से जारी है लेकिन कंपनी भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्व में 1962 से आने के कारण अब तक इसके 6 सफल दशक पूर्ण चुके हैं।

कंपनी की वर्तमान स्थिति : वर्तमान में, मॉयल 11 खानों का संचालन करती है, सात महाराष्ट्र के नागपुर और भंडारा जिलों में और चार मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले में स्थित हैं। ये सभी खदानें लगभग एक सदी पुरानी हैं। 4 को छोड़कर, बाकी खानों को भूमिगत विधि के माध्यम से काम किया जाता है। बालाघाट खदान कंपनी की सबसे बड़ी खदान है। खदान अब सतह से लगभग 383 मीटर की गहराई तक खनन कर चुकी है। महाराष्ट्र के भंडारा जिले में स्थित डोंगरी बुजुर्ग माइन एक ओपेनकास्ट खान है जो मैगनीज डाइऑक्साइड अयस्क का उत्पादन करती है जिसका उपयोग बैटरी उद्योग द्वारा किया जाता है। मैंगनीज ऑक्साइड के रूप में इस अयस्क का उपयोग पशु आहार और उर्वरकों के लिए सूक्ष्म पोषक तत्व के रूप में किया जाता है। मॉयल भारत में डाइऑक्साइड अयस्क की कुल आवश्यकता का लगभग 50% पूरा करता है। वर्तमान में, वार्षिक उत्पादन लगभग 1.1 मिलियन टन है जो आने वाले वर्षों में बढ़ने की उम्मीद है।

कंपनी के उत्पादन : कंपनी ने अपने उत्पादन में वृद्धि के साथ–साथ इसकी गुणवत्ता का भी पूरा ध्यान रखा है। आज कंपनी की गणना वैश्विक स्तर की खनन कंपनियों में की जाती है। वैज्ञानिक प्रगति के साथ कदम मिलाते हुए कंपनी के शोध एवं विकास डिवीजन ने मैंगनीज और इसके अन्य भण्डारों का पता लगाया है। जिससे उत्पादन में आशाजनक वृद्धि हुई। मॉयल मैंगनीज अयस्क के विभिन्न ग्रेड का उत्पादन और बिक्री करता है जो निम्नलिखित हैं :–

1. फेरो मैंगनीज के उत्पादन के लिए उच्च ग्रेड के अयस्क।
2. सिलिको मैंगनीज के उत्पादन के लिए मध्यम ग्रेड अयस्क।
3. गर्म धातु के उत्पादन के लिए आवश्यक ब्लास्ट फर्नेस ग्रेड अयस्क।
4. शुष्क बैटरी कोशिकाओं और रासायनिक उद्योगों के लिए डाइऑक्साइड।

मॉयल ने इलेक्ट्रोलाइटिक मैंगनीज डाइऑक्साइड (ईएमडी) की 1,500 मीट्रिक टन प्रति वर्ष की क्षमता का निर्माण करने के लिए स्वदेशी तकनीक पर आधारित

एक संयंत्र स्थापित किया है। इस उत्पाद का उपयोग सूखी बैटरी कोशिकाओं के निर्माण के लिए किया जाता है। कंपनी द्वारा उत्पादित इलेक्ट्रोलाइटिक मैंगनीज डाइऑक्साइड गुणवत्ता अच्छी है और बाजार में इसकी स्वीकार्यता भी बहुत अच्छी है। मॉयल में फेरो मैंगनीज का भी एक संयंत्र है जिसकी क्षमता 12,000 मीट्रिक टन प्रति वर्ष है।

21वीं सदी में अर्जित उपलब्धियाँ : इसमें कोई संदेह नहीं कि वर्ष 2000 के बाद से कंपनी ने एक नये युग में पदार्पण किया है। इस नयी शताब्दी के आरंभ से ही कंपनी का विकासात्मक ढ़ाँचा उन्नतशील होता गया। कंपनी पूर्ण रूप से अपने राजस्व पर निर्भर है इसलिए इसके राजस्व व आवक के लिए कंपनी प्रबंधन का सजग और समर्पित होना अपरिहार्य है। कंपनी ने कुशल रणनीति के द्वारा राजस्व के स्तर को सदैव उतरोत्तर वृद्धि की ओर बनाये रखा।

कंपनी की कुल आय के प्रामाणिक आँकड़े बताते हैं कि वित्तीय वर्ष 2000–01 में 16970.89 लाख रूपये था। कंपनी की कामयाब नीतियों ने इसमें सतत बढ़ोत्तरी की है जिसके प्रतिफल में वर्ष 2005–06 में 35619.30 लाख रूपये, वर्ष 2010–11 में 129058.79 लाख रूपये, वर्ष 2015–16 में 88089 लाख़ रूपये तथा वित्तीय वर्ष 2020–21 में कुल आय की राशि 127985 लाख़ रूपये रही।

उपर्युक्त पाँच वर्षों के अंतराल पर रिकार्ड किए गए ये आँकड़े मॉयल लिमिटेड के कुल आय में उतरोत्तर वृद्धि को दर्शाते हैं। कंपनी की दूरगामी कॉरपोरेट नीतियों के समुचित कार्यान्वयन से संदर्भित हर वित्त वर्ष में कुल आय बढ़ता ही रहा है। इन आँकड़ों से कंपनी के एक महत्वपूर्ण राजस्व अर्जक की छवि बनती है।

कंपनी ने जिस प्रकार से हर अगले वर्ष में बढ़त हासिल करते हुए, वृद्धिशील आय हासिल की है उससे उस पर आयकर का दायित्व भी बढता रहा है। राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी का उचित पालन करते हुए, कंपनी ने राजकोष में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया है।

ये सभी लक्ष्य कंपनी के उचित मिशन और विज़न को मनोयोग से करने का परिणाम रहा है। जैसा कि कंपनी के उत्पादों की चर्चा हमने की है। कंपनी के हर खनिज उत्पादों जैसे कि फेरो मैंगनीज, सिलिको मैंगनीज, ब्लास्ट फर्नेस ग्रेड अयस्क और डाइऑक्साइड का उत्पादन हमेशा बढ़ते ही रहा है।

हर दस वर्ष के समयान्तराल पर खनिजों के उत्पादन में वृद्धि दर्ज हुई है। कंपनी ने न केवल खनन–उत्पादन बल्कि हर क्षेत्र में बेहतर कार्यशैली से लक्ष्य से आगे ही अर्जित किया है।

मॉयल की महत्वपूर्ण नीतियाँ : किसी लक्ष्य प्राप्ति के लिए आपकी नीतियाँ जीत का पूरी गारंटी होती हैं। निगम के हर क्षेत्र की सफलता के पीछे इसकी परिणामदायी नीतियाँ हैं। कंपनी के सुचारू रूप से संचालन के लिए सुरक्षा नीति, निवेशक नीति, पर्यावरण नीति, जोखिम नीति, सतर्कता नीति इत्यादि कार्यान्वित की गयी है। इसके अतिरिक्त भी कई व्यापारिक महत्व की नीतियाँ भी हैं।

कंपनी की उतरोत्तर सफलता का ही परिणाम है कि वित्तीय वर्ष 2010–11 के दौरान, मॉयल को 15 दिसंबर, 2010 को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध किया गया। लिस्टिंग के बाद, कंपनी में भारत सरकार की (71.57%) हिस्सेदारी थी। महाराष्ट्र सरकार का (4.62%) और मध्य प्रदेश सरकार का (3.81%) और सार्वजनिक (20%)। वर्तमान में कंपनी की शेयरहोल्डिंग सरकार है। भारत का (53. 84%), भारत सरकार महाराष्ट्र का (5.11%) और मध्य प्रदेश सरकार का (5.40%) और (35.65%) सार्वजनिक है।

मानव संसाधन एवं कार्मिक हित : मुझे आप सभी से यह बात साझा करते हुए बड़ी खुशी हो रही है कि कंपनी के ऐतिहासिक मजदूरी निपटारा पर दिनांक 16.11.2021 को मुख्य श्रमायुक्त (केन्द्रीय), नई दिल्ली की उपस्थिति में मॉयल प्रबंधन और एमकेएस, यूनियन के बीच हस्ताक्षर किया गया था।

वास्तव में, यह हम सभी के लिए बड़ा सुखद अवसर है, विशेषकर इस दृष्टि से कि यह मॉयलकर्मियों के लिए एक बहुत ही फायदेमंद वेतन पुनरीक्षण हस्ताक्षरित हुआ है जो आपके जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार के लिए अपेक्षित है। मुझे विश्वास है कि इससे आप कंपनी के विकास और समृद्धि के लिए पहले से भी अधिक समर्पित ढंग से कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे।

सामाजिक उत्तरदायित्व व राजभाषा : कंपनी अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए पूर्णतः सजग है। ग्रामीण क्षेत्रों में वृक्षारोपण, सड़क निर्माण, विद्यालयों का निर्माण, स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त युवाओं को रोजगार के लिए आवश्यक प्रशिक्षण उपलब्ध कराना, अप्रेन्टिस प्रशिक्षण देना, छात्राओं को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने जैसे अनेक कार्यक्रम में मदद की गयी। पूरी दुनिया जब कोरोना संकट से जूझ रही थी तब भी कंपनी ने अपनी ओर से सहायता उपलब्ध करायी।

इसी क्रम में मैंगनीज ओर इंडिया लिमिटेड (मॉयल) के सौजन्य से दो ऑक्सीज़न संयंत्र स्थापित किए जाने हैं। कंपनी अपने निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व निधि (सीएसआर फ़ंड) से रू. 3.5 करोड़ की सहायता प्रदान करेगी। इन दो संयंत्रों में से, एक सावनेर में जबकि दूसरा उमरेड तहसील में स्थापित किया जाएगा।

सामाजिक सेवा के साथ–साथ राष्ट्र की सेवा के लिए भी मॉयल दृढ़संकल्प है। राजभाषा में कामकाज के प्रति प्रबंधन सहित कार्मिकों में भी जबरदस्त रूझान है। मॉयल की हिंदी पत्रिका मॉयल भारती को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त होना न केवल गौरव की बात है बल्कि सभी कर्मचारियों के हिंदी कामकाज को भी दर्शाता है।

कंपनी में सभी स्थायी दस्तावेज, ज्ञापन, परिपत्र, रिपोर्टें, समझौता, जाँच व निरीक्षण हिंदी में ही किए जाते हैं। राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी वार्षिक कार्यक्रम पर पूर मंभीरता के साथ अमल किया जाता है।

मेरी कामना है कि मॉयल का हर कार्मिक कंपनी की नींव बने, इसे मजबूत करे। आज़ादी के अमृत महोत्सव की बेला पर हम मनन करें कि इस खनन उद्योग को और आगे बुलंदियों पर ले जाना है। राष्ट्र का हित करना है, स्वयं को आत्मनिर्भर बनाना है और इस ऐतिहासिक कंपनी को स्वर्णिम भविष्य की ओर ले जाना है। इसके लिए आप सभी का सहयोग और समर्थन अपेक्षित है।

जय हिंद!

पत्रिका मॉयल भारती सम्माननीत

बालाघाट (जबलपुर एक्सप्रेस)।

भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले मिनी रत्न 'ए' शेड्यूल सरकारी उपक्रम मॉयल लिमिटेड केन्द्र सरकार के द्वारा दिये गये निर्देशों का शब्दशः पालन करते हुए जहां विभागीय कार्य में हिन्दी भाषा को विशेष रूप से प्राथमिकता देती है। वही वह अपने कामगार कर्मचारी अधिकारियों के लिये गृह पत्रिका 'मॉयल भारती' के नाम से भी प्रकाशित करती है। जिसमें सकारात्मक रचनात्मक ज्ञानवर्धन सामग्री का समावेश होता है। गत दिवस नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति नराकाश नागपुर द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में संस्था द्वारा कंपनी की इस पत्रिका मॉयल भारती को वर्ष 2020-21 हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान कर सम्माननीत किया गया। उपरोक्त पुरस्कार पत्रिका के संपादक श्रीमती पूजा वर्मा द्वारा ग्रहण किया गया। इस कार्यक्रम में पॉवर ग्रिड कार्यालय के कार्यपालक निदेशक महाप्रबंधक एवं मध्य रेल्वे के अनेक वरिष्ठ अधिकारी विशेष रूप से उपस्थित थे। उपरोक्त उपलब्धि अर्जित करने पर मॉयल के अधिकारी एवं कर्मचारी द्वारा संपादक श्रीमती वर्मा को विशेष रूप से बधाई देते हुए कहा गया कि इस सम्मान से निश्चित रूप से कंपनी का गौरव हिन्दी क्षेत्र में और ऊंचा उठेगा और पत्रिका निकट भविष्य में और अधिक सामग्री का समावेश कर रोचक जानकारियों से मॉयल परिवार के सदस्यों को अवगत करायेगी।

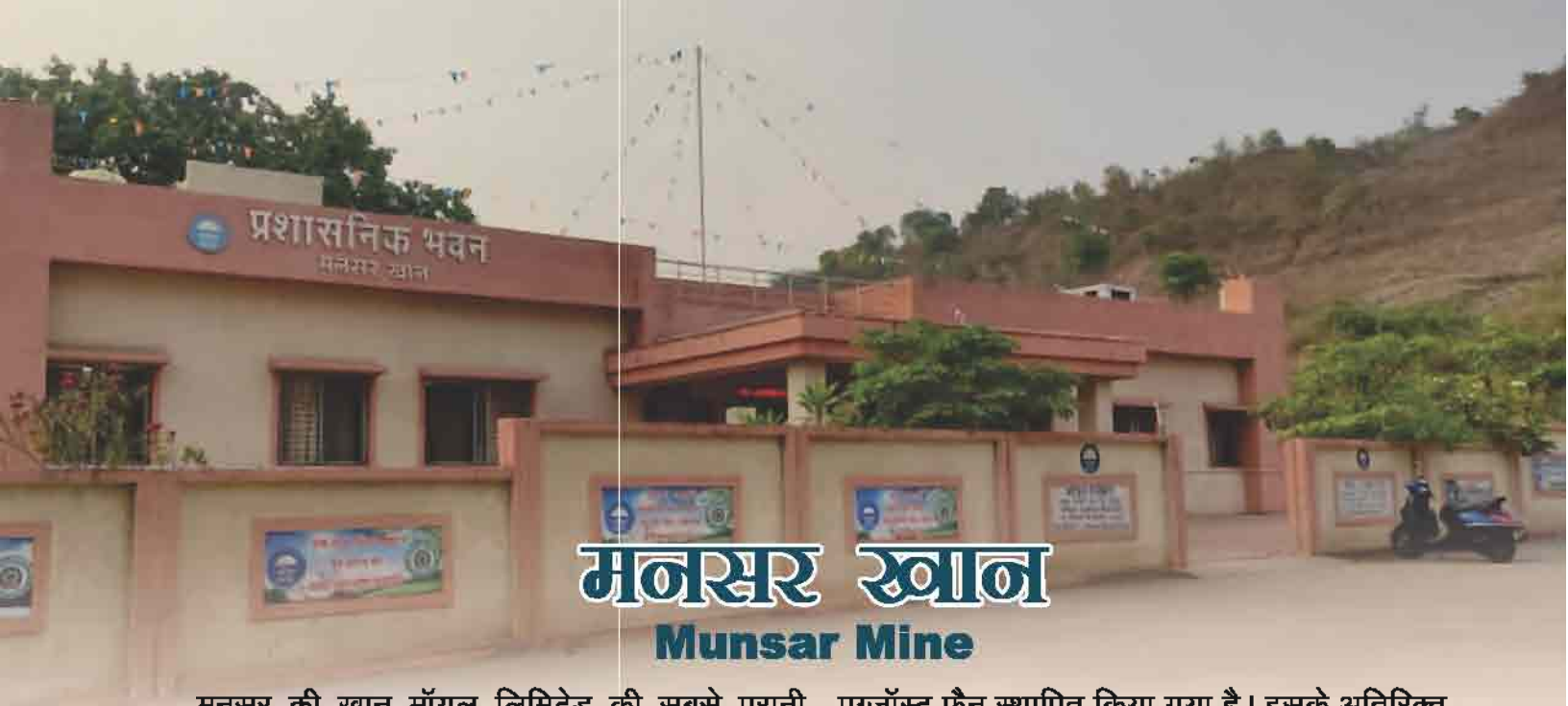

मनसर खान
Munsar Mine

मनसर की खान मॉयल लिमिटेड की सबसे पुरानी खान है। यहाँ सन् 1900 ई. से ही ब्रिटिशकालीन कंपनी सीपीएमओ अर्थात् सेण्ट्रल प्रोविन्स मैंगनीज ओर कंपनी लिमिटेड (वर्तमान में मॉयल लिमिटेड) द्वारा खनन कार्य आरंभ है। उत्पादन की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण खदान है जो पिछले 100 वर्षों से भी अधिक समय से संचालित है। इस खदान में मैंगनीज का एक अयस्क ब्रूनाइट प्रचुर मात्रा में मिलता है। मनसर खान का विस्तार 2.7 किमी. में है जिसमें 6 से 8 मीटर की मोटी परत में अयस्क उपलब्ध है।

स्थापना	:	1900
स्वरूप	:	भूमिगत खदान
विस्तार	:	140.49 हेक्टयर
खनिज	:	मैंगनीज का ब्रुनाइट अयस्क
क्षमता	:	49992 मीट्रिक टन
जिला	:	नागपुर
राज्य	:	महाराष्ट्र

मनसर खान की कार्य–प्रणाली आधुनिक तकनीकी से युक्त है। भूमिगत कटाई और खनन के उपरांत खोखले हिस्से की भराई के लिए अत्याधुनिक हाइड्रोलिक सैण्ड स्टोइंग का उपयोग किया जाता है। खान में प्रवेश करने के लिए दो रास्ते हैं–वर्टिकल शाफ्ट और सर्विस विंज। 169 मीटर की गहराई में उतरने के लिए वर्टिकल शाफ्ट को स्थापित किया गया है। हर 30 मीटर पर पड़ाव बनाये गये है और इस प्रकार कुल 05 पड़ाव बनाये गये हैं। अच्छे वायु संचार के लिए 3340 चक्कर प्रति मिनट क्षमता का 270 डिग्री तक घूमने वाला शक्तिशाली एग्जॉस्ट फैन स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त मुहाने पर ही 4000 चक्कर प्रति मिनट क्षमता का 170 डिग्री तक घूमने वाला एक और एग्जॉस्ट फैन लगाया गया है।

मनसर खान की भौगोलिक स्थिति आसान पहुँच वाली और सुगम यातायात से जुड़ी है। यह नागपुर मॉयल लिमिटेड के मुख्यालय से 45 किमी. दूर नागपुर–जबलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। इस खान तक रेलमार्ग भी उपलब्ध है। सबसे निकटतम रेलवे स्टेशन 'रामटेक' है जो 01 किमी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ मौसम देश के औसत जलवायु के अनुरूप ही रहता है। यहाँ अधिकतम तापमान 48 डिग्री तक जाता है और वर्षा 1100 मिमी. वार्षिक स्तर पर होती है। खान के आस–पास का क्षेत्र ग्रामीण और कस्बाई है। खान के निकट ही पर्वत पर भोसले शासनकालीन निर्मित भगवान श्रीराम का गढ़–मंदिर है। मंदिर परिसर के पास ही कविकुलगुरू कालिदास जी का स्मारक भी है। मनसर क्षेत्र में प्राकृतिक शोभा से आच्छादित आधुनिक पर्यटन स्थल भी उपलब्ध हैं। यहाँ स्थित कविकुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है।

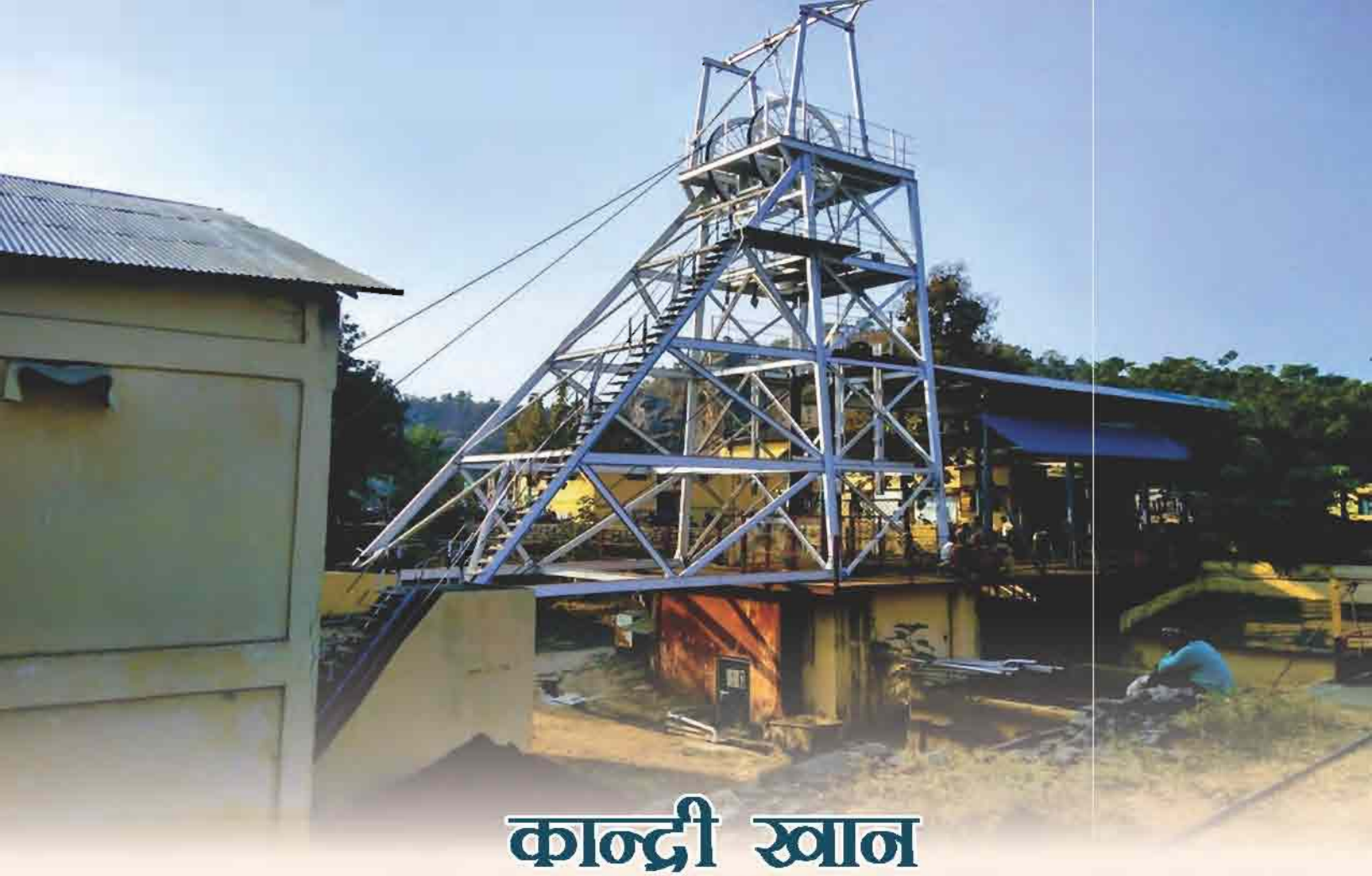

कान्द्री खान
Kandri Mine

कान्द्री की खान मनसर क्षेत्र के नजदीक है। यहाँ अयस्कों का पता 1900ई. में चला लेकिन खनन कार्य 1903 में स्वीकृत किया गया। 20वीं शताब्दी के आरंभ में, मध्य भारत की मैंगनीज खदानों का अधिकार एक ब्रिटिश कंपनी 'सेण्ट्रल प्रोविन्स प्रॉस्पेक्टिंग सिंडिकेट' को था। बाद में यह सिंडिकेट एक लिमिटेड कंपनी बनी और कालान्तर में सन् 1962 में भारत सरकार के अधिपत्य के बाद इसे मैंगनीज ओर इंडिया लिमिटेड (मॉयल लिमिटेड) का नाम मिला। इसलिए कान्द्री की खदानें एक प्रकार से संस्थापक खदानें है जिन्हें लेकर कंपनी का खनन इतिहास आरंभ होता है।

स्थापना	:	1903
स्वरूप	:	भूमिगत खदान
विस्तार	:	83.06 हेक्टेयर खनन
खनिज	:	मैंगनीज
क्षमता	:	63000 मीट्रिक टन
जिला	:	नागपुर
राज्य	:	महाराष्ट्र

शुरूआत में, कान्द्री की खदानें खुली स्वरूप की थीं। वर्तमान में, कान्द्री खदान का कुल पट्टाधारित क्षेत्र 83.06 हेक्टेयर का है जिसमें 24.82 हेक्टेयर का संरक्षित वनक्षेत्र, 13.00 हेक्टेयर में जंगल–झाड़ी तथा 32.61 हेक्टेयर राजस्वदायी भूमि और 12.63 हेक्टेयर क्षेत्र व्यक्तिगत भूमि है। यहाँ वर्ष 1980 में वर्टिकल शाफ्ट स्थापना की गयी थी जो 242 मीटर की गहराई में उतरने के लिए सक्षम है जिससे खदान के सभी आंतरिक स्तरों तक पहुँचा जा सकता है।

कान्द्री की खान नागपुर जिला मुख्यालय से 42 किमी. दूर रामटेक तहसील के अंतर्गत कान्द्री गाँव के पास है। रामटेक रेलवे स्टेशन यहाँ का नजदीकी रेलवे स्टेशन है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

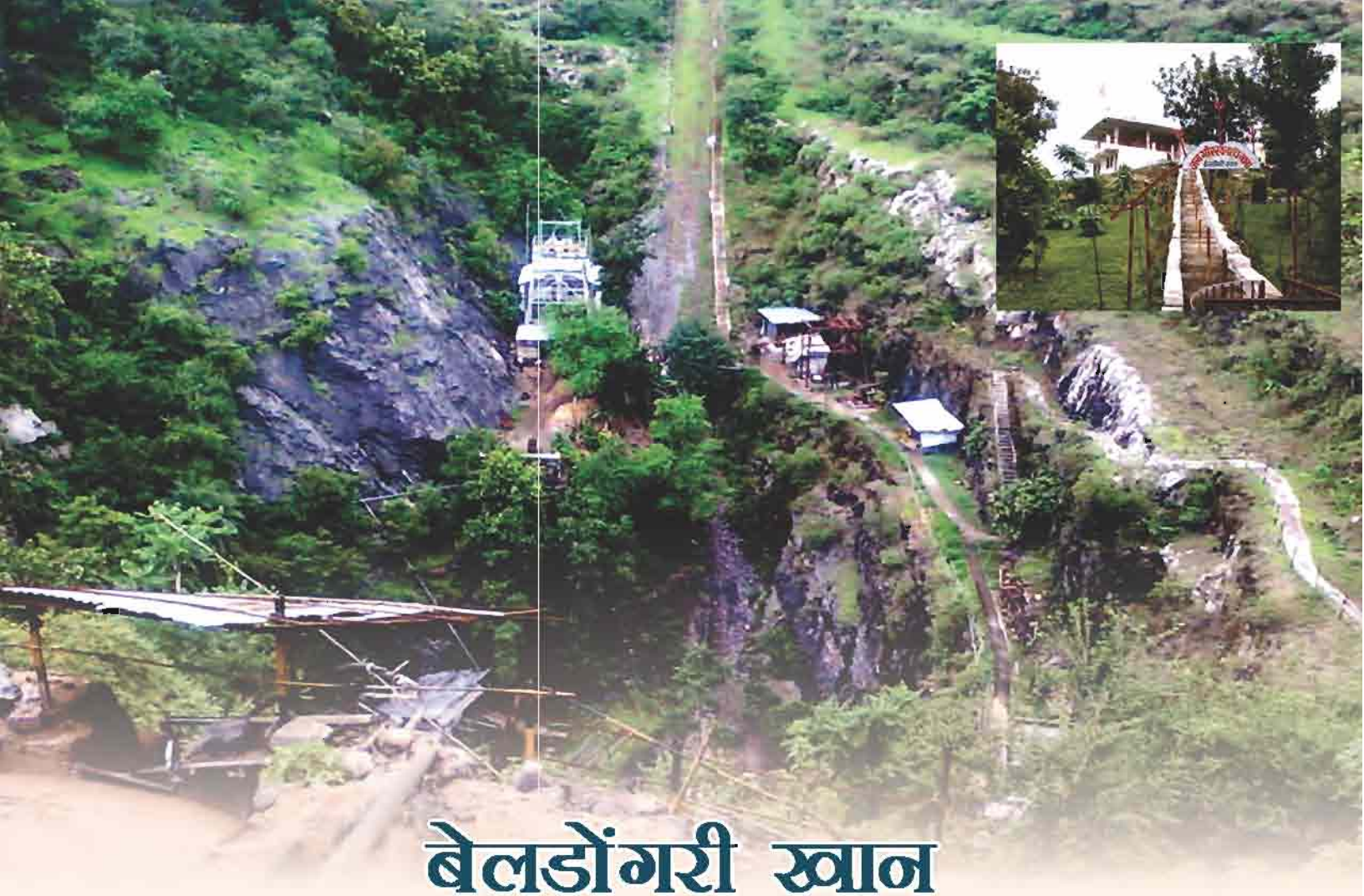

बेलडोंगरी खान
Beldongari Mine

बेलडोंगरी खान मॉयल लिमिटेड की एक जटिल खान है। यह नागपुर जिले के पारशिवनी तहसील के बेलडोंगरी गाँव में स्थित है जो नागपुर जिला मुख्यालय से 44 किमी. दूर स्थित है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 7 से जुड़ा हुआ है। इस खान का नज़दीकी रेलवे स्टेशन डुमरीखुर्द है जो खान से आधा किलोमीटर की दूरी पर है यह नगरधन कस्बे से होते हुए रामटेक से भी जुड़ा हुआ है।

स्थापना	:	1900
स्वरूप	:	भूमिगत खदान
विस्तार	:	65.17 हेक्टेयर खनन
खनिज	:	मैंगनीज, माइका इलिमिनाइट
क्षमता	:	60000 मीट्रिक टन
जिला	:	नागपुर
राज्य	:	महाराष्ट्र

बेलडोंगरी की खदानें भूमिगत हैं। पूरा खदान का मैदान बेलडोंगरी की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यह मिलने वाला अयस्क बजरीनुमा होता है। बेलडोंगरी खदान का अयस्क पूरी तरीके से घुमावदार तालों में माइका इलिमिनाइट से पटा है। यहाँ की भूमिगत खदानें में बड़े सुरक्षित ढंग से कार्य किया जाता है। यहाँ पर अयस्क शोधन का तल 306 मीटर पर है। यद्यपि यहाँ पर 234 एमआरएल से 148 एमआरएल तक पहुँच संभव है। खदान का अधिक हिस्सा भूमिगत होने के कारण हर बार की ब्लास्टिंग के बाद अगल–बगल की दीवारों एवं ढ़ीली–लटकती चट्टानों से बचाव के लिए समुचित तैयारी की जाती है। यथासंभव ठोंक और सहारे सबसे पहले खड़े कर लिए जाते हैं। धँसने व फिसलने इत्यादि की सभी कमजोर जगहों को बोल्ट/केबल बोल्ट/टिम्बर/स्टील सपोर्ट के द्वारा टिकाये रखा जाता है।

चिखला खान
Chikhla Mine

चिखला खान महाराष्ट्र राज्य के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित भंडारा जिले में है और खान भारत के शीर्ष शीट नंबर के सर्वेक्षण अनुसार देशांतर 79.45 पूर्व और अक्षांश 21.31 उत्तर में है। 50.14 खदान, पश्चिम में नागपुर जिले से घिरा हुआ है। महाराष्ट्र राज्य और पूर्व में बालाघाट जिला, मध्यप्रदेश राज्य, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश राज्यों के बीच राज्य की सीमा 8 कि.मी. दूरी पर उत्तर से बहनेवाली बावनथडी नदी द्वारा चिन्हित है। खदान का कुल पट्टा क्षेत्र 150.646 हेक्टेयर है। ग्राम चिखला, सितासावंगी एवं येदरबुची में जलप्रपात क्रमशः 82.034 हेक्टेयर, 60.326 हेक्टेयर और 8. 286 हेक्टेयर है। वर्तमान में खदान का काम चिखला मेन (वर्टिकल सेक्शन) और चिखला 'बी' सेक्शन में भूमिगत तरीके से किया जाता है एवं विकास गतिविधि ऊर्ध्वाधर (–)270' लेवल, (–)370' लेवल और (–)470' लेवल में की जाती है।

स्थापना	:	1900
स्वरूप	:	भूमिगत खदान
विस्तार	:	150.64 हेक्टेयर खनन
खनिज	:	मैंगनीज, माइका इलिमिनाइट
क्षमता	:	180000 मीट्रिक टन
जिला	:	नागपुर
राज्य	:	महाराष्ट्र

चिखला खान में भूमिगत कार्य मुख्य खंड में संचालित होते है, जहाँ –270 लेवल, –370 लेवल एवं –470 लेवल संचालन में है। जबकि 70 लेवल एवं –170 लेवल का कार्य पूर्ण हो चुका है। चिखला मेन सेक्शन में खनन के लिए करीब 10 स्टॉपिंग परमिशन मौजूद है। चिखला 'बी' सेक्शन में लगभग 3 नग स्टॉप ब्लॉको की संख्या खनन के लिए मौजूद है । चिखला 'बी' इन्कलाईन सेक्शन में विकास का कार्य किया जाता है।

चिखला खान में मैंगनीज अयस्क का उत्खनन चिखला ग्राम कें अंतर्गत आनेवाली सीमा के भीतर होता है एवं चिखला खान का प्रशासनिक कार्यालय ग्राम पंचायत सितासावंगी कें अंतर्गत आता हैं प्रशासनिक कार्यालय में माईन ऑफिस, टाईम ऑफिस, सर्वे विभाग, विद्युत विभाग, यांत्रिकी विभाग, सिविल विभाग, कार्मिक विभाग, वित्त विभाग, रचना विभाग, कल्याण विभाग, भू–विज्ञान विभाग आदि. का समावेश है। चिखला खान के प्रशासनिक कार्यालय के बाजू में, यूनियन ऑफिस तथा अभिकर्ता समुह–।। का कार्यालय है। ग्राम सितासावंगी एवं चिखला परिसर में कर्मचारियों के निवास के लिए कंपनी द्वारा क्वॉर्टर की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। चिखला खान में कर्मचारियों को चिकित्सा सुविधा प्रदान कराने के दृष्टिकोण से सितासावंगी में कंपनी द्वारा कंपनी चिकित्सालय की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

यदि कोई भाषा भारत के अधिकांश भाग में स्वीकार की जा सकती है तो वह हिंदी है। – रमेशचन्द्र दत्त

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गुमगांव खान
Gumgaon Mine

मॉयल लिमिटेड की गुमगांव खदान में सन 1902 से काम चल रहा है। खान का कुल पट्टा क्षेत्र 85.89 हेक्टेयर का है जिसमें नागपुर जिले की सावनेर तहसील तहत आने वाले ग्राम गुमगांव, तेगई, खापापेठ और कोडेगांव के चार पट्टे शामिल हैं। गुमगांव खदान के 4 पट्टों के अलावा 16.16 हेक्टेयर का वन क्षेत्र भी शामिल है।

गुमगाँव खान का स्थान और वहाँ तक की पहुँच आसान है। गुमगांव खदान महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जिले की सावनेर तहसील में स्थित है और सर्वे ऑफ इंडिया टॉपोशीट नंबर 55 के/15 में आता है। खदान को पास में ही स्थित गाँव के नाम के आधार पर गुमगाँव खान दिया गया है। गुमगाँव खदान के लिए नागपुर से छिंदवाड़ा जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग–47 से होकर पहुँचा जा सकता है। यह पाटनसावंगी से लगभग 8 किमी दूर है जो सभी मौसमों में यातायात के लिए एक सरल मार्ग है। इसका निकटतम रेलवे स्टेशन सावनेर में है जो खदान से 8 किमी दूर है।

स्थापना	:	1902
स्वरूप	:	भूमिगत खदान
विस्तार	:	85.896 हेक्टेयर खनन
खनिज	:	मैंगनीज, माइका इलिमिनाइट
क्षमता	:	203200 मीट्रिक टन
जिला	:	नागपुर
राज्य	:	महाराष्ट्र

खदान के आसपास का स्थानीय भूविज्ञान महत्वपूर्ण है। गुमगाँव भण्डार का मैंगनीज अयस्क क्षितिज सॉसर समूह के मनसर फॉर्मेशन से संबंधित है। मॉयल द्वारा जमा भण्डार का खनन भूमिगत खनन प्रणाली से किया जाता है जो 126.84 हेक्टेयर के अनुप्रयुक्त क्षेत्र से सटा है। चूँकि भूमिगत खदान पूरी तरह से विकसित हो चुकी है और 20 वीं शताब्दी की शुरुआत से काम किया जा रहा है, इसलिए अवसंरचना पहले ही स्थापित हो चुकी है। यह क्षेत्र पूर्व–पश्चिम की स्ट्राइक के साथ एंटीक्लिनल रूप में प्रदर्शित होता है और मध्यम से उच्च कोण के साथ दक्षिण की ओर झुका हुआ है। यह तह भी कम कोण के साथ पश्चिम की ओर झुकती है। पूर्वी ब्लॉक को दक्षिण में विस्थापित करते हुए, उत्तर पूर्व–दक्षिण पश्चिम दिशा में एक ऊर्ध्वाधर दोष के साथ जमा भण्डार दोषपूर्ण है। इस जमा को 129 बोरहोल के साथ –1300'लेवल की गहराई तक खोजा गया है। क्षेत्र के भीतर खनन के लिए उपलब्ध औसत मोटाई 3 से 43 मीटर के बीच है। निक्षेप मनसर फॉर्मेशन के माइका सिस्ट द्वारा और सीतासॉन्गी फॉर्मेशन के माइकेसियस क्वार्टजाइट शिस्ट द्वारा अंडरलाइन किया गया है। यहाँ मिलने वाले खनिजों में ब्राउनाइट्स, हॉलैंडाइट प्रमुख हैं जो भण्डार को उपयोगी बनाते हैं। 1.9 किमी की कुल स्ट्राइक लंबाई को कवर करते हुए 129 बोर होल्स के साथ अयस्क क्षेत्र का पता लगाया गया है। उच्च कायांतरण के कारण, अयस्क पिंड बहुत संरचनात्मक विकृतियाँ नहीं दिखाता है जैसे कि तंग तह या दोष इत्यादि। अन्वेषण से अयस्क क्षेत्र की खोजी गई लंबाई पर समान ग्रेड वितरण के साथ परिवर्तनीय मोटाई का खुलासा हुआ है।

डोंगरी बुजुर्ग खान

Dongari Bujurg Mine

डोंगरी बुजुर्ग खान एक विश्व प्रसिद्ध खान है। यहाँ पाये जाने वाला इलेक्ट्रोलाइटिक मैंगनीज डाइऑक्साइड की माँग भारत के अलावा विदेशों में भी है यह उत्पाद अपने में बिलकुल अनोंखा है। डोंगरी बुजुर्ग बालापुर हमेशा एवं कुरमुड़ा गाँव में फैली हुई है यह मॉयल लिमिटेड की एकमात्र खदान है जहाँ मैंगनीज डाइ–ऑक्साइड श्रेणी के अयस्क प्राप्त होते हैं। इसके अलावा भी डोंगरी बुजुर्ग खान से अन्य उच्च श्रेणी के मैंगनीज अयस्क मिलते है। यह खदान भंडारा जाने वाले राष्ट्रीय मार्ग–6 पर स्थित है।

स्थापना	:	1900
स्वरूप	:	खुली खदान
विस्तार	:	3.80 हेक्टेयर
उत्पादन	:	मैंगनीज अयस्क
क्षमता	:	1500 मीट्रिक टन (इलेक्ट्रोलेटिक मैंगनीज डाय आक्साइड) 4.20 लाख मीट्रिक टन मैंगनीज अयस्क
जिला	:	नागपुर
राज्य	:	महाराष्ट्र

इस खदान से बहुमूल्य खनिजों के मिलने के कारण इसकी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जाता है। इसके लिए सशस्त्र सुरक्षा प्रहरियों को तैनात किया गया है जो खदान क्षेत्र की देखभाल करते हैं।

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। – महर्षि दयानन्द सरस्वती
आज़ादी का अमृत महोत्सव

बालाघाट खान
Balaghat Mine

सेंट्रल प्रोविंस प्रॉस्पेक्टिंग सिंडिकेट ने बीसवीं सदी के शुरुआत में मूल रूप से मैंगनीज खानों का अधिग्रहण किया था। इस सिंडिकेट को वर्ष 1908 में एक देयता कंपनी में बदल दिया गया था और अप्रैल वर्ष 1924 में इसका नाम बदलकर सेंट्रल प्रोविंस मैंगनीज ओर कंपनी लिमिटेड कर दिया गया था। जुलाई 1962 में भारत सरकार ने कंपनी का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया और नागपुर में अपने प्रधान कार्यालय के साथ इसे मैंगनीज अयस्क (इंडिया) लिमिटेड के रूप में फिर से नाम दिया। 2010 में आंशिक विनिवेश के बाद अब कंपनी को मॉयल लिमिटेड के नाम से जाना जाता है।

स्थापना	:	1900
स्वरूप	:	भूमिगत खदान
विस्तार	:	2.7 किमी. का विस्तृत खनन क्षेत्र
खनिज	:	मैंगनीज का ब्रुनाइट अयस्क
क्षमता	:	500000 मीट्रिक टन
जिला	:	बालाघाट
राज्य	:	मध्य प्रदेश

बालाघाट खदान मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले में स्थित है और नागपुर से 223 किमी दूर है। यह सभी मौसम वाली सड़कों से पहुंचा जा सकता है। बालाघाट मैंगनीज खदान बालाघाट रेलवे स्टेशन से 6 किमी दूर है। खदान क्षेत्र टोपो शीट नंबर 64 सी/एफ पर पड़ता है और 21°50 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 80°14 डिग्री पूर्वी देशांतर पर स्थित है। इस खदान में वर्ष 1903 में खनन शुरू किया गया था। बालाघाट खदान में दो पट्टे हैं यानी (ए) 182.3004 हेक्टेयर पट्टा और (बी)76.509 हेक्टेयर पट्टा। अतः कुल पट्टा क्षेत्र 259.589 हेक्टेयर है। बालाघाट खदान एशिया की सबसे गहरी और सबसे बड़ी भूमिगत मैंगनीज खदान है।

यह जग प्रसिद्ध है कि बालाघाट खदान उच्च गुणवत्ता वाले मैंगनीज अयस्क के भंडार में समृद्ध है। भूमिगत खदान से निकाले गए कुल अयस्क को वर्ष 2007 में स्थापित एकीकृत मैंगनीज बेनिफिशिएशन प्लांट (आईएमबी प्लांट) के माध्यम से संसाधित किया जाता है। संयंत्र का उद्देश्य फेरो ग्रेड अयस्क की वसूली बढ़ाना है इस संयंत्र में प्रति वर्ष 5,00,000 टन आरओएम संचालन क्षमता है। संयंत्र के भूमिगत बंकर का रोम भी। संयंत्र के संचालन के दौरान कई तरह के ऑपरेशन किए जाते हैं, जैसे– (क) क्रशिंग : जॉ क्रशर के माध्यम से +75 ROM मिमी की सामग्री को –75 ROM मिमी तक कुचलना (ख) स्क्रीनिंग : स्क्रीन के 3 नंबर के माध्यम से आरओएम का आकार बदलना (ग) छँटाई/चुनना : पीकिंग बेल्ट से हस्तचालित माध्यम द्वारा और (घ) इलेक्ट्रॉनिक नियंत्रित वायु स्पंदनशील जिग्स द्वारा जिगिंग।

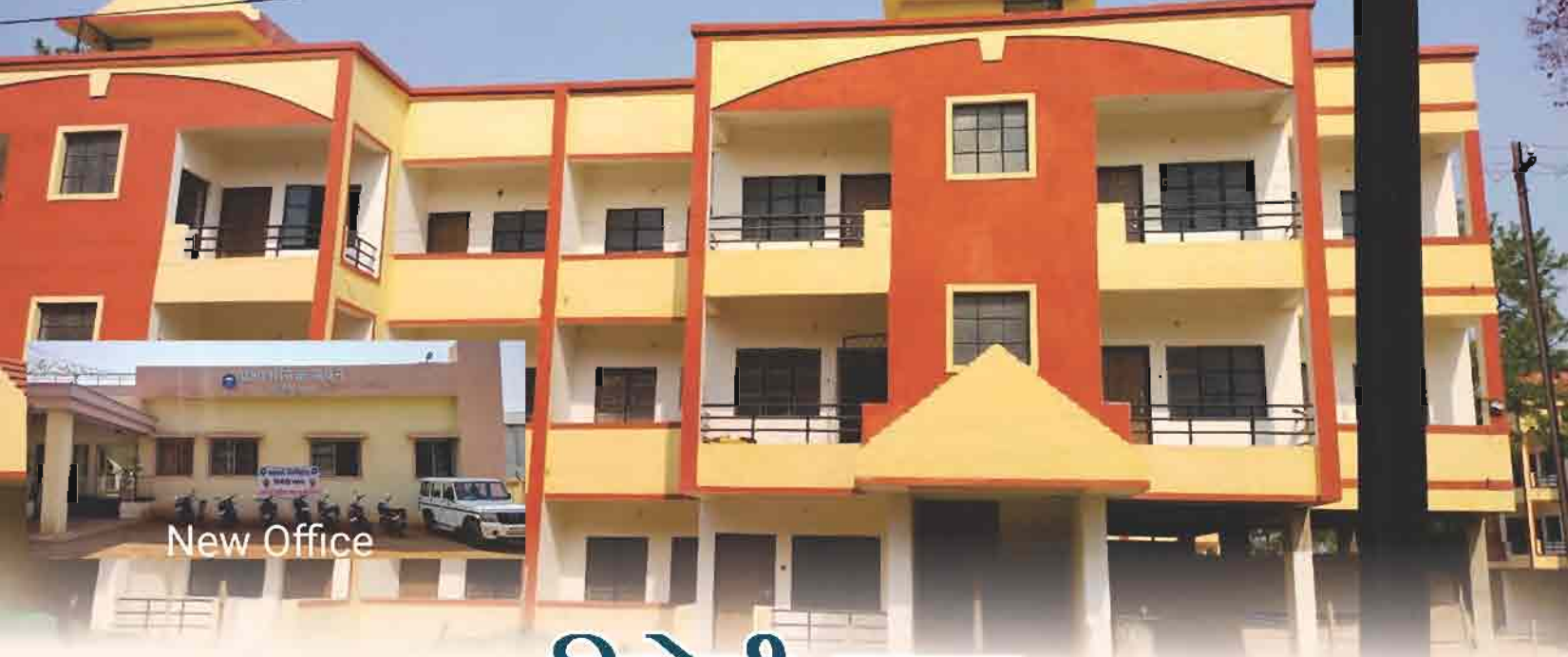

तिरोड़ी खान
Tirodi Mine

तिरोड़ी खान, मॉयल लिमिटेड की एक महत्वपूर्ण राजस्व देने वाली प्रमुख खदान है। इसकी स्थापना एवं आरंभ ब्रिटिशकाल में सन् 1902 ई. में हुआ था। यह शुरू में 1902 से 1934 तक टाटा मैंगनीज़ ओर(टीएमओ) के तत्वावधान में संचालित होता रहा। सन् 1934 में यह खदान सेंट्रल प्रोविन्सेस मैंगनीज़ ओर(सीपीएमओ) में चली गई और सन् 1934 से 1962 तक यह खदान (सीपीएमओ) के अंतर्गत कार्यरत रही। सन् 1962 में (सीपीएमओ) का राष्ट्रीयकरण हो गया। जिसके बाद यह भारत सरकार के अंतर्गत एक सार्वजनिक उपक्रम के रुप में स्थापित हुई जिसका नाम मैंगनीज़ ओर इंडिया लिमिटेड रखा गया। वर्ष 1962 से 2011 तक यह खान मैंगनीज़ ओर इण्डिया लिमिटेड की इकाई के नाम से जानी गई। वर्ष 2011 में इसका नाम मॉयल लिमिटेड रखा गया।

स्थापना	:	1902
स्वरूप	:	खुली हुई खदान
विस्तार	:	2.7 किमी. का विस्तृत खनन क्षेत्र
खनिज	:	मैंगनीज का ब्रुनाइट अयस्क
क्षमता	:	112700 मीट्रिक टन
जिला	:	तिरोडी, बालाघाट
राज्य	:	मध्य प्रदेश

वर्ष 1962 तक तिरोड़ी खदान एशिया की सबसे बड़ी ओपन कास्ट खदान थी। उस समय लगभग 25000 लोग तिरोड़ी खदान में कार्यत थे। वर्तमान में भी तिरोड़ी खदान एक महत्वपूर्ण ओपन कास्ट खदान है जिसमें कुल कर्मचारियो की संख्या 411 है एवं यहाँ इनके लिए आवासीय परिसरों एवं प्रशासनिक भवन का निर्माण किया गया।

आरंभिक दिनों में तिरोड़ी तक का रास्ता दुर्गम था। कंपनी के द्वारा यहाँ बुनियादी सुविधाएं विकासित की गयीं। सन् 1902 में तिरोड़ी खदान के लिए एक रेल्वे स्टेशन की स्थापना की गयी। इसके लिए वर्ष 1902 से 1934 तक नैरोगेज लाइन मैंगनीज़ ढुलाई के लिए चलाई गई एवं 1934 से निरन्तर ब्रॉडगेज लाईन चालू है।

तिरोड़ी खदान का क्षेत्र इसके आरंभिक वर्ष 1902 में 3 हिस्से में फैली हुआ था। ये तीन क्षेत्र–(क) तिरोड़ी साउथ खान, (ख) तिरोड़ी नॉर्थ खान तथा (ग) सितापठोर खान थे। बाद में, सीतापठोर खान को अलग कर दिया गया और एक नयी खान का दर्जा दिया गया जबकि तिरोड़ी साउथ खान एवं तिरोड़ी नॉर्थ खान को मिलाकर एक में कर दिया गया। आज तिरोड़ी खान, पूरे देश में एक जानी मानी ओपन कास्ट खदान है।

हम हिंदुस्तानियों का एक ही सूत्र रहे–हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी, हमारी राष्ट्रलिपि नागरी। – रेहाना तैयबजी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सीतापटोर खान
Sitapatore Mine

सीतापटोर खान मॉयल लिमिटेड की एक दूर स्थित खदान है। पहले यह तिरोड़ी खान के अंतर्गत ही कार्यान्वित होती थी। इसके संचालन एवं प्रशासनिक कार्य को तिरोडी खान के द्वारा ही संपादित किया जाता था। उत्पादन की दृष्टि से इसे एक स्वतंत्र खदान के रूप में, सन् 2000 में मान्यता प्रदान की गयी।

इस खदान में खनन कार्य के लिए खनिकों के अलावा आधुनिक मशीनों का उपयोग किया जाता है। अन्वेषण, खनन, सुरक्षा एवं परिवहन के लिए पर्यावरण हितैषी तकनीक के माध्यम से कार्य किए जाते हैं।

स्थापना	:	1902
स्वरूप	:	खुली हुई खदान
विस्तार	:	2.7 किमी. का विस्तृत खनन क्षेत्र
खनिज	:	मैंगनीज का ब्रुनाइट अयस्क
क्षमता	:	32000 मीट्रिक टन
जिला	:	बालाघाट
राज्य	:	मध्य प्रदेश

उकवा खान
Ukwa Mine

उकवा खदान मॉयल लिमिटेड के मुख्यालय से सबसे दूर स्थित है। यह मध्य प्रदेश राज्य के बालाघाट जिले की बैहर तहसील के उकवा गाँव के पास स्थित है और बालाघाट शहर के उत्तर–पूर्व में लगभग 45 किमी. की दूरी पर है। यह 21°58′ उत्तरी अक्षांश और 80°28′ पूर्वी देशांतर पर स्थित है। मॉयल मुख्यालय नागपुर से इसकी दूरी लगभग 220 किमी है।

स्थापना	:	1904
स्वरूप	:	भूमिगत खदान
विस्तार	:	6.5 किमी. का विस्तृत खनन क्षेत्र
खनिज	:	मैंगनीज का ब्रुनाइट अयस्क
क्षमता	:	244000 मीट्रिक टन
जिला	:	उकवा, बालाघाट
राज्य	:	मध्य प्रदेश

यह मॉयल लिमिटेड की पुरानी खदानों में से एक है। इसकी शुरूआत ब्रिटिशकाल में की गयी थी। अंग्रेजों द्वारा ही उकवा में मैंगनीज अयस्क खदान विकसित की गयी थी। इस खदान में वर्ष 1904 में खनन कार्य शुरू किया गया था। यह एक ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण बात है कि एशिया में सबसे बड़ी और पहली हवाई रोपवे लाइन का उपयोग अयस्क के परिवहन के लिए किया गया था। रोपवे के द्वारा उकवा से भरवेली तक अयस्क का परिवहन कार्य किया जाता था।

शुरूआत में, इस खदान में ओपनकास्ट पद्धति से काम किया जाता था और पहाड़ी की चोटी पर अयस्क को बाहर निकाला जाता था। फिर खदान को भूमिगत खदान में बदल दिया गया। वर्तमान में यह खदान खनन के 'फ्लैट बैक कट एंड फिल' विधि द्वारा संचालित है और अयस्क के निष्कर्षण द्वारा निर्मित रिक्तियों को बेकार चट्टानों और रेत से भरा जा रहा है।

भारत मे मैंगनीज अयस्क उद्योग का विकास

मॉयल लिमिटेड, (पूर्व में मैगनीज ओर इंडिया लिमिटेड) मिनिरत्न शेड्युल "ए" का सार्वजनिक उपक्रम है जिसकी मूलतः स्थापना 1896 में हुई थी। वर्तमान में मॉयल 6 खदानों का प्रचालन करती है– महाराष्ट्र के नागपुर एवं भंडारा जिलें में 7 खदानें तथा मध्य प्रदेश के बालाघाट जिलें में 4 खदानें स्थित है। मॉयल लिमिटेड द्वारा चलाई जा रहें खदानों की सूची नीचे दर्शाएनुसार हैः

विश्व में लोहा, एल्युमिनीयम तथा तांबा के पश्चात सबसे अधिक मात्रा में उपयोग किए जाने वाला चौथे नंबर का धातु मैंगनीज है। मैगनीज, इस्पात की शक्ति, कडापन, प्रतिरोधकता, कठोरता तथा कार्यक्षमता में सुधार करता है तथा डी–ऑक्सीडाजर एवं डी–सल्फराईजर के तौर पर भी काम करता है। इस्पात बनाने की प्रक्रीया में मैंगनीज का कोई समाधानकारक विकल्प की पहचान नही की गई है जो इसके, असाधारण तकनिकी लाभ के साथ इसके कम मुल्य का विकल्प बन सके। इस्पात में अधिकतम मैंगनीज, मैंगनीज अलॉय (फैरो मैंगनीज एव सिलिको मैंगनीज) के रूप में उपयोग किया जाता है।

उपयोग – विश्व में उत्पादित होने वाला मैंगनीज अयस्क का लगभग 95% मैंगनीज अलॉय के उत्पादन में उपयोग किया जाता है तथा शेष की खपत बैटरी, रसायन, एल्युमिनियम एवं तांबा अलॉय में की जाती है। मैंगनीज का अति महत्वपूर्ण अ–धात्विक उपयोग मैंगनीज डाय–आक्साईड के रूप में होता है जो शुष्क सेल बैटरी में डी–पोलराईजर के तौरपर उपयोग किया जाता है। रसायन उद्योग भी मैंगनीज का उपयोग पोटाशियम परमॅगनेट, मैंगनीज सल्फेट इत्यादि बनाने में करते है।

भारत में मैंगनीज का खनन – देश में मैंगनीज का खनन भूतल के साथ–साथ भूगर्भ प्रणाली द्वारा किया जाता है। देश के 149 परिचालित खदानों में से 8 भूगर्भ खदानें है। सभी भूगर्भ खदानें अर्ध–यंत्रिकृत है तथा स्टोपिंग के लिए कट एंड फील प्रणाली अपनाई जाती है। भूतल खदानों का कार्य मॅन्यूअल एवं अर्ध–यंत्रिकृत प्रणाली से ड्रील्स ,डम्पर ट्रक्स, एक्सकॅवेटर, इत्यादि का परिनियोजन करके किया जाता है। अयस्क श्रेणी के चयन हेतु हस्त छटांई एवं दृश्य श्रेणीकरण का तरिका अपनाया जाता है। अयस्क की कोटि बढाने के लिए कुछ खदानों पर मॅन्यूअल के साथ यंत्रिकृत झिगिंग की जाती है।

रेल्वे द्वारा भेजने के लिए खदान से रेल स्थानक तक मैंगनीज अयस्क का परिवहन किया जाता है जहां से रेल ग्राहक तक उसे पंहुचाया जाता है। सडक मार्ग द्वारा भी खदान से ग्राहक तक सीधे परिवहन किया जा रहा है।

मॉयल में आजादी का अमृत महोत्सव आयोजित

बालाघाट (जबलपुर एक्सप्रेस)।

केन्द्र सरकार के आव्हान पर आजादी के 75वीं वर्षगाठ के अवसर पर अन्य संस्थानों की तरह मॉयल लिमिटेड के मुख्यालय से लेकर खदान शाखा तक आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत विविध कार्यक्रमों का आयोजन निरंतर जारी है। उसी के अंतर्गत भारत सरकार श्रम एवं रोजगार मंत्रालय नई दिल्ली द्वारा प्राप्त दिशानिर्देश के अनुसार विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। इसी श्रृखला में 07 से 13 मार्च तक प्रतिष्ठित सप्ताह मनाया जा रहा है। 08 मार्च को उपमुख्य श्रम आयुक्त केन्द्रीय कार्यालय नागपुर एवं मॉयल लिमिटेड द्वारा संयुक्त रूप से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें किशोर कुमार मलिक उपमुख्य श्रम आयुक्त केन्द्रीय नागपुर द्वारा श्रम कानून के अंतर्गत कामगार कर्मचारी एवं ठेका श्रमिकों को मिलने वाली सुविधायें एवं लाभ के संदर्भ में जानकारी दी गई। साथ ही नियोक्ता एवं ठेकेदारों

को समय समय पर श्रम कानून के नियमानुसार जिम्मेदारी एवं अनुपालन की जानकारी भी दी गई।

इस प्रतिष्ठित सप्ताह का उद्घाटन समारोह मॉयल लिमिटेड के नागपुर मुख्यालय आडिटोरियम में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मॉयल के निदेशक मानव संसाधन श्रीमती उषा सिंह ने की तथा किशोर कुमार मलिक उपमुख्य श्रम आयुक्त केन्द्रीय नागपुर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस समारोह में एलईओ केन्द्रीय प्रशांत तिरपुड़े, दिलीप मेहतकर एवं मॉयल के उपमुख्य सतर्कता अधिकारी मनोज तिवारी विशेष तौर पर उपस्थित रहे। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष श्रीमती सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि श्रम कानून में जो प्रावधान है, उसके अनुसार साप्ताहिक अवकाश, कार्य का समय, वेतन भुगतान की तारीख, राष्ट्रीय अवकाश, महिला एवं पुरूष को सामान वेतन एवं अन्य लाभ के बारे में विस्तृत जानकारी दी जानी चाहिये। इसके अतिरिक्त उन्होंने श्रम कानून में हो रहे संशोधन के संदर्भ में भी संक्षिप्त जानकारी से उपस्थित प्रतिभागियों को अवगत कराया। कार्यक्रम में विशेष जानकारी देते हुए श्री मलिक ने कहा कि श्रम कानूनों के संबंध में भारत सरकार के नियम सभी जगह लागू है। जिनके अनुपालन की जिम्मेदारी नियोक्ता की होती है। जिसमें काम की अवधि न्यूनतम वेतन, महिला एवं पुरूष कर्मियों का सामान वेतन के साथ बोनस, मातृत्व अवकाश, श्रमिकों की सुरक्षा एवं कल्याण के प्रावधान आदि के संबंध में विस्तार से बताया। सवाल जवाब सत्र में उपस्थित कामगार कर्मचारी, ठेकेदारों एवं श्रमिकों ने अपने कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं के संबंध में सवाल पूछे जिसका जवाब श्री मलिक एवं श्रीमती सिंह ने देते हुए उनकी शंकाओं का समाधान किया। कार्यक्रम में मॉयल के अधिकारी, कर्मचारी, ठेकेदार एवं श्रमिक बड़ी सख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुख्य प्रबंधक कार्मिक समीर बेनर्जी द्वारा किया गया।

इस्पात राजभाषा सम्मान पुरस्कारों से सम्मानित

नागपुर, 9 मार्च. इस्पात मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक 3 मार्च को केंद्रीय इस्पात मंत्री राम चंद्र प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में मदुरै, तमिलनाडु में आयोजित की गई थी. बैठक के उपाध्यक्ष, इस्पात और ग्रामीण विकास राज्य मंत्री, फग्गन सिंह कुलस्ते भी इस अवसर पर उपस्थित थे. इस अवसर पर रामचंद्र प्रसाद सिंह ने मॉयल को राजभाषा के प्रयोग में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए वर्ष 2018-19, 2019-20 के लिए इस्पात राजभाषा सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किया. मॉयल के सीएमडी श्री मुकुंद पी चौधरी और निदेशक मानव संसाधन श्रीमती ऊषा सिंह को मॉयल के प्रदर्शन और हिंदी भाषा के उपयोग में योगदान के लिए सम्मानित किया गया. समिति ने हिंदी की प्रगति की विस्तार से समीक्षा की.

सब लोग अपनी-अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए हिंदी को साधारण भाषा के रूप में पढ़ें। – महर्षि अरविन्द

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख अनुदेश

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश (1) राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत संकल्प, सामान्य आदेश नियम, अधिसूचना, करार, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्ति आदि द्विभाषी रूप में ही जारी किए जाएं। किसी प्रकार के उल्लंघन के लिए हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी को जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

(2) अधीनस्थ सेवाओं की भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्नपत्र को छोड़कर शेष विषयों के प्रश्नपत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए और ऐसे प्रश्नपत्र अंग्रेजी तथा हिंदी दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए जाएं। साक्षात्कार में भी हिंदी माध्यम की उपलब्धता अनिवार्य रूप से रहनी चाहिए। केन्द्रीय सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों तथा उनसे सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों तथा केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रणाधीन निगमों, उपक्रमों, बैंकों आदि में सभी सेवाकालीन विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं में (अखिल भारतीय स्तर की परीक्षाओं सहित) अभ्यर्थियों को प्रश्न–पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए। प्रश्न–पत्र दोनों भाषाओं (हिंदी और अंग्रजी) में तैयार कराए जाएं। जहां साक्षात्कार लिया जाना हो, वहां भी प्रश्नों के उत्तर हिंदी में देने की छूट दी जाए।

(3) सभी प्रकार की वैज्ञानिक/तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने के लिए और प्रोत्साहित किया जाए। उक्त शोध पत्र सम्बद्ध मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि के विषय विशेष से संबंधित होने चाहिएं।

(4) 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में सभी प्रकार का प्रशिक्षण चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घावधि का, सामान्यतः हिंदी माध्यम से होना चाहिए। 'ग' क्षेत्र में प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जाए और प्रशिक्षार्थी की मांग के अनुसार हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध कराई जाए।

(5) केन्द्र सरकार के कार्यालयों में जब तक हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक संबंधी निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिए जाते, तब तक उनमें केवल हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक ही नियुक्त किए जाएं।

(6) अन्तर्राष्ट्रीय संधियों और करारों को अनिवार्य रूप में हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराया जाए। विदेशों में निष्पादित संधियों और करारों के प्रामाणित अनुवाद तैयार कराके रिकार्ड के लिए फाइल में रखे जाएं।

(7) नियम 10(4) के अन्तर्गत अधिसूचित बैकों की शाखाओ में निम्नलिखित कार्य हिंदी में किए जाएं– ग्राहकों द्वारा हिंदी में भरे गए आवेदनों और ग्राहकों की सहमति से अंग्रेजी में भरे गए आवेदनों पर जारी किए जाने वाले मांग ड्राफ्ट, भुगतान आदेश, सभी प्रकार की सूचियां–विवरणियां, सावधि जमा–रसीदें, चैक बुक संबंधी पत्र आदि दैनिक बही मस्टर, लेजर प्रेषण बही, पास बुक, लॉग बुक में प्रविष्टियां, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, सुरक्षा ग्राहक सेवा संबंधित कार्य, नए खाते खोलना, लिफाफों पर पते लिखना, कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, आवास निमार्ण अग्रिम, चिकित्सा संबंधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची–कार्यवृत्त।

(8) विदेश स्थित भारतीय कार्यलायों सहित सभी मंत्रालयों/विभागों आदि की लेखन सामग्री, नाम पट्ट, सूचना–पट्ट, फार्म, प्रक्रिया संबंधी साहित्य, रबड़ की मोहरें, निमंत्रण पत्र आदि अनिवार्य रूप से हिंदी–अंग्रेजी में बनवाए जाएं।

(9) भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य अखिल भारतीय सेवा के अधिकारियों के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी–मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हिंदी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता है ताकि सरकारी कामकाज में वह इसका प्रयोग कर सकें। परन्तु अधिकांश अधिकारी सेवा में आने के पश्चात् सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग नहीं करते। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों में सही संदेश नहीं जाता। परिणामस्वरूप, सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अपेक्षित मात्रा में नहीं हो पाता। मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों आदि के वरिष्ठ अधिकारियों का

यह संवैधनिक दायित्व है कि वह अपने सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन को गति मिलेगी।

(10) सभी मंत्रालय/विभाग इस विभाग द्वारा हिंदी के प्रयोग को बढावा देने के लिए चलाई गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का अपने सम्बद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों में भी व्यापक प्रचार–प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठा सकें और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो।

(11) तिमाही प्रगति रिपोर्ट संबंधी सूचना निर्धारित प्रोफार्मा में ई–मेल द्वारा प्रत्येक तिमाही की समाप्ति के अगले माह की 30 तारीख तक राजभाषा विभाग को उपलब्ध करा दी जाए। हस्ताक्षरित प्रति अलग से भेजी जाए।

(12) सरकार की राजभाषा नीति के प्रति अधिकारियों/कर्मचारियों को सुग्राही बनाने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में हुई प्रगति की समीक्षा को मात्र राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों तक ही सीमित न रखा जाए। इस संबंध में मानीटरिंग को और अधिक प्रभावी और कारगर बनाने के लिए यह जरूरी है कि मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधानों द्वारा ली जाने वाली प्रत्येक बैठक में इस पर नियमित रूप से विस्तृत चर्चा की जाए और इसे कार्यवृत्त की एक स्थायी मद के रूप में शामिल किया जाए।

(13) प्रशिक्षण और कार्यशालाओं सहित राजभाषा हिंदी में कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को भी कार्यालय में बैठने के लिए अच्छा व समुचित स्थान उपलब्ध कराया जाए ताकि वे अपने कर्तव्यों का निर्वाह ठीक तरह से कर सकें।

14) राजभाषा विभाग द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि नियमित रूप से अपने कर्मचारियों को नामित करें और नामित कर्मचारियों को निदेश दें कि वे नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित रहें, पूरी तत्परता से प्रशिक्षण प्राप्त करें तथा परीक्षाओं में बैठें। प्रशिक्षण को बीच में छोड़ने या परीक्षाओं में न बैठने वाले मामलों को कड़ाई से निपटा जाए।

(15) अनुवादकों को मानक शब्दकोश (अंग्रेजी–हिंदी व हिंदी–अंग्रेजी) तथा अन्य तकनीकी शब्दावलियां उपलब्ध कराई जाएं ताकि वे अनुवाद कार्य में इनका उपयोग करें।

(16) सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि हिंदी में प्रशिक्षण के लिए नामित अधिकारियों/कर्मचारियों के लाभ के लिए "लीला–हिंदी प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ" आदि साफ्टवेयर के उपयोग के लिए कंप्यूटर की सुविधा उपलब्ध करवाएं।

(17) सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि अपने–अपने प्रशासनिक दायित्वों से संबंधित विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक–लेखन को प्रोत्साहित करने तथा अपने विषयों से संबंधित शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

(18) सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि अपने केन्द्रीय सेवाओं के प्रशिक्षण संस्थाओं में राजभाषा हिंदी में प्रशिक्षण की व्यवस्था उसी स्तर पर करें जिस स्तर पर लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में करायी जाती है और अपने विषयों से संबंधित साहित्य का सृजन करवाएं जिससे प्रशिक्षण के बाद अधिकारी अपने कामकाज सुविधा पूर्वक राजभाषा हिंदी में कर सकें।

19) सभी मंत्रालय/विभाग सरकारी कामकाज में तथा गृह–पत्रिकाओं आदि में "अहिंदी भाषी" शब्दों के स्थान पर "अन्य भाषा भाषी" में अथवा हिंदीतर भाषी" शब्दों का प्रयोग करे।

माननीय हिंदी सलाहकार समिति की बैठक

इस्पात मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक 3 मार्च, 2022 को केंद्रीय इस्पात मंत्री श्री राम चंद्र प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में मदुरै, तमिलनाडु में आयोजित की गई थी। बैठक के उपाध्यक्ष, इस्पात और ग्रामीण विकास राज्य मंत्री, श्री फग्गन सिंह कुलस्ते भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री रामचंद्र प्रसाद सिंह ने मॉयल को राजभाषा के प्रयोग में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए वर्ष 2018–19, 2019–20 के लिए "इस्पात राजभाषा सम्मान" पुरस्कार से सम्मानित किया। मॉयल के सीएमडी श्री मुकुंद पी चौधरी और निदेशक मानव संसाधन श्रीमती ऊषा सिंह को मॉयल के प्रदर्शन और हिंदी भाषा के उपयोग में योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

समिति ने हिंदी की प्रगति की विस्तार से समीक्षा की और कार्यालय कार्यों में हिंदी के प्रगतिशील उपयोग को बढ़ावा देने के लिए मॉयल के प्रयासों की सराहना की।

MOIL को 8 राष्ट्रीय सुरक्षा पुरस्कार

■ नागपुर, व्यापार प्रतिनिधि. मॉयल लिमिटेड ने हाल ही में 8 राष्ट्रीय सुरक्षा पुरस्कार जीते. दिल्ली में आयोजित समारोह में वित्तीय वर्ष 18-19 और 20 के लिये मनसर, उकवा, चिखला और कांद्री खदान को दुर्घटना मुक्त होने के लिए, वही तिरोड़ी, मनसर और गुमगांव खदान को न्यूनतम इंजरी रेट वर्ग के लिए पुरस्कार मिले. पुरस्कार केंद्रीय कामगार और रोजगार मंत्री भूपेंद्र यादव से सीएमडी मुकुंद चौधरी और एम.एम.अब्दुल्ला ने प्राप्त किए.

मॉयल के खदानों को आठ राष्ट्रीय सुरक्षा पुरस्कार

मनसर और उकवा खदान को 2017 तथा चिखला खदान को वर्ष 2019 में सबसे कम दुर्घटनाओं के लिए प्रथम राष्ट्रीय सुरक्षा पुरस्कार और कांद्री खदान को वर्ष 2020 में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। वर्ष 2019 कार्य के दौरान सबसे कम चोट आवृत्ति दर के लिए तिरोड़ी ओपनकास्ट खदान को प्रथम पुरस्कार तथा 2021 में तिरोड़ी एवमं मनसर खदान को प्रथम पुरस्कार तथा द्वितीय पुरस्कार गुमगाव खदान को प्रदान किया गया। इस प्रकार कुल आठ राष्ट्रीय सुरक्षा पुरस्कार प्राप्त हुये।

भारत सरकार के श्रम और रोजगार, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेंद्र यादव के हाथो अनंत मसादे, निलकमल भरणे, दिलीप डेकाटे, रविदास तांडीया, उम्मेदसिंग भाटी, एहफाज कुरेशी, सुधीर पाठक, शंकरलाल राऊत, राजेश कुमार सिंग, सुनिल रामपती पटेल, आंनद चौकसे, प्रवीण बागडे, राजेश भटटाचार्य, उमाकांत भुजाडे इन्होंने पुरस्कार ग्रहण किया। कार्यकम का आयोजन 8 मार्च को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में किया गया था।

राजभाषा नीति और उसका प्रबंधन

देशपाल सिंह राठौर
अध्यक्ष एवं मुख्य प्रबंध न्यासी
सदस्य हिंदी सलाहकार समिति
इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार

सन 1917 में गुजरात शिक्षा सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में गांधी जी ने कहा था– "हिंदी मैं उसे कहता हूं, जिसे उत्तरी भारत में हिंदू तथा मुसलमान बोलते हैं तथा जो नागरी या उर्दू लिपि में लिखी जाती है। हिंदी तथा उर्दू दो अलग–अलग भाषाएं नहीं है। शिक्षित लोगों ने उस में अंतर कर रखा है" भाषा का शब्द समूह गांधीजी की दृष्टि में बोलचाल के समीप होना चाहिए। वे नागरी लिपि को अधिक वैज्ञानिक या भारत की राष्ट्रलिपि के होने के योग्य मानते थे। 18 फरवरी 1939 के 'हरिजन सेवक' में उन्होंने लिखा था कि यदि भारत में कोई सर्वमान्य हो सकने वाली लिपि है, तो वह नागरी है। वे कभी भी रोमन लिपि के पक्ष में नहीं रहे, उन्होंने यहां तक कहा कि अगर मेरी चले तो सभी प्रांतीय भाषाओं के लिए नागरी का इस्तेमाल हो। इस प्रकार गांधी जी की भाषा– नीति बहुत ही वस्तुपरक, व्यावहारिक और स्पष्ट थी उन्हीं की सत्प्रेरणा के फलस्वरुप सन 1949 ई. में संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा स्वीकार कर लिया। इस प्रकार हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिलाने में महात्मा गांधी की ऐतिहासिक भूमिका रही है।

स्वतंत्रता– प्राप्ति के बाद 14 सितंबर, 1949 ई. को संविधान– सभा ने सर्वसम्मति से हिंदी को राजभाषा बनाया। इस संबंध में संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक संघ की राजभाषा नीति के बारे में संवैधानिक व्यवस्था की गई। हिंदी को राजभाषा का दर्जा तो दिया गया किंतु, दूसरी ओर संवैधानिक उपबंधो पर कार्यवाही के लिए ठोस, ढांचा तैयार करने हेतु 15 वर्षों की अवधि यह कहकर तय की गई कि इस अवधि में अंग्रेजी हिंदी के साथ–साथ सहभाषा या सखी भाषा के रूप में समस्त राज– काज की भाषा बनी रहेगी। 15 वर्षों की यह अवधि देखते– ही– देखते समाप्त हो गई और इस बीच हिंदी को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में जो भी योजनाएं बनाई गई थी वे प्रायः शिथिल रही, जिस कारण अंग्रेजी को अपदस्थ करने की योजना खटाई में पड़ गई राजभाषा का पद प्राप्त होने के बावजूद संस्कृत, फारसी और फिर अंग्रेजी को इस देश में राज–काज की भाषा बनने का अवसर मिला था, किंतु स्वतंत्रता– प्राप्ति के बाद संविधान ने राजभाषा का पद हिंदी को दिया, तथापि राजनीतिक दुश्चक्रो की शिकार होकर हिंदी की वही दशा बनी रही, जैसी राजतिलक के लिए बुलाए गए श्री राम की हुई, जिन्हें माता कैकई के वरदान के फल स्वरुप राजगद्दी पर बैठने की जगह 14 वर्षों को वनवास दे दिया गया।

महात्मा गांधी ने अंग्रेजी के बढ़ते प्रयोग और हिंदी की अनदेखी महसूस करते हुए 20 अप्रैल 1935 को हिंदी साहित्य सम्मेलन के अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था– "अंग्रेजी राष्ट्रभाषा कभी नहीं बन सकती आज इसका साम्राज्य–सा जरूर दिखाई देता है। लेकिन इससे हमें इस भ्रम में कभी नहीं पड़ना चाहिए कि अंग्रेजी राष्ट्रभाषा बन रही है। हिंदुस्तान को अगर सचमुच एक राष्ट्र बनाना है तो चाहे कोई माने या ना माने राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिंदी को प्राप्त है वह किसी भी दूसरी भाषा को कभी नहीं मिल सकता।" यह खेद का विषय है कि गांधी जी के उक्त विचार स्वतंत्रता के 72 वर्षों के बाद भी कार्यान्वित नहीं हो पाए हैं और राजभाषा हिंदी राजनीति की शिकार होकर संवैधानिक अधिकार पाने से वंचित रही है। हिंदी राजभाषा तो है किंतु उस पद पर अब तक प्रायः अंग्रेजी ही जमी बैठी है।

14 सितंबर 1949 को संविधान भाषा ने सर्वसम्मति से देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा स्वीकार किया। अंको के संबंध में विचार करते हुए भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूप को ही अपनाया गया। राजभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार करने में तीन प्रमुख बातों का ख्याल रखा गया (d) हिंदी का राजभाषा के रूप में विकास किया जाए (k) संविधान के 15 आरंभिक वर्षों तक अंग्रेजी ही भाषा रहे (x) हिंदी के विकास के कारण अन्य भारतीय भाषाओं के हितों की उपेक्षा न की जाए इस निर्णय का संपूर्ण देश ने स्वागत किया। संविधान सभा द्वारा स्वीकृत राजभाषा संबंधी अनुच्छेदों की 343 से 351 तक व्याख्या की गयी है।

अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश दिये गये है।

हिंदी भाषा की प्रसार वृद्धि करना उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके तथा उसकी आत्मीयता में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी और अष्टम सूची में उल्लेखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात् करते हुए तथा जहां आवश्यक और वांछनीय हो, वहां उस शब्द– भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से तथा गौणतः वैसी उल्लिखित भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी संवृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य होगा।

संविधान के अनुच्छेद 343 में जब 15 वर्षों तक अंग्रेजी का भाषा के रूप में बनाए जाने की बात कही गई थी तो मंशा यही थी, कि इस बीच तकनीकी, वैज्ञानिक, विधिक तथा अन्य विषयों से संबंधित शब्दावली और ग्रंथ हिंदी में तैयार कर लिए जाएंगे ताकि हिंदी आत्मनिर्भर हो जाए और राजभाषा हिंदी में काम–काज होने लगे। राष्ट्रपति को यह भी अधिकार दिया गया था की वे 15 वर्षों की इस अवधि में अंग्रेजी के साथ कुछ कार्यों के लिए हिंदी के प्रयोग का भी आदेश दे सकते हैं। अनुच्छेद 343 की तीसरी धारा के अंतर्गत यह व्यवस्था की गई कि संसद 15 साल की कलावधि के बाद भी विधि द्वारा अंग्रेजी भाषा को जारी रखने के लिए उपबंद कर सकती है। इन उपबंधों का अनुचित लाभ उठाकर राजनीति के लोगों ने हिंदी के साथ तथा अन्य भारतीय भाषाओं के हित की बात न सोच कर अंग्रेजी की पक्षधरता प्रकट की। इसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ने आज तक हिंदी को राजभाषा का वास्तविक दर्जा प्राप्त करने से वंचित रखा।

राष्ट्रपति ने संविधान के अनुच्छेद 343 के खंड (2) उपबंध द्वारा प्राप्त अधिकारों का प्रयोग करके एक आदेश जारी किया गया जिसका नाम था 'संविधान आदेश 1955' इस आदेश के उपबंधों के अंतर्गत भारत सरकार के सभी मंत्रालय तथा संबद्ध विभागों के कार्यो के लिए अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी भाषा का प्रयोग करने का निर्देश दिया।

हिंदी की अभिवृद्धि, विकास प्रचार– प्रसार और प्रगामी प्रयोग के संबंध में जहां तक केंद्र सरकार के दायित्व का प्रश्न है, वह दायित्व विशेषतः भारत सरकार के शिक्षा, विधि, ग्रह और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालयो को सौंपा गया है। इन मंत्रालयों के अलावा भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों में भी हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए आवश्यक कदम उठाए गए हैं। विविध मंत्रालयों की अलग–अलग हिंदी सलाहकार समितियां हैं, जिनके अध्यक्ष उस मंत्रालय के मंत्री होते हैं। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों द्वारा हिंदी के प्रचार– प्रसार के संबंध में बनाए गए कार्यक्रमों में समन्वय के उद्देश्य से 1967 ई. में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में 'केंद्रीय हिंदी समिति' का गठन किया गया। विभिन्न मंत्रालयों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित जो योजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं, उनका अवलोकन भी प्रासंगिक होगा।

राजभाषा संकल्प, 1968

संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित निम्नलिखित सरकारी संकल्प आम जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है -

संकल्प

''जब तक संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी रहेगी और उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का प्रसार, वृद्धि करना और उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके, संघ का कर्तव्य है :

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एंव विकास की गति बढ़ाने के हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिर्पार्ट संसद की दोनों सभाओं के पटल पर रखी जाएगी और सब राज्य सरकारों को भेजी जाएगी।

2. जबकि संविधान की आठवीं अनुसूची में हिंदी के अतिरिक्त भारत की 21 मुख्य भाषओं का उल्लेख किया गया है, और देश की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओं के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक उपाए किए जाने चाहिए :
यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के साथ-साथ इन सब भाषाओं के समन्वित विकास हेतु भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा ताकि वे शीघ्र समृद्ध हो और आधुनिक ज्ञान के संचार का प्रभावी माध्यम बनें।

3. जबकि एकता की भावना के संवर्धन तथा देश के विभिन्न भागों में जनता में संचार की सुविधा हेतु यह आवश्यक है कि भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श से तैयार किए गए त्रि-भाषा सूत्र को सभी राज्यों में पूर्णत कार्यान्वित करने के लिए प्रभावी किया जाना चाहिए :

यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा के, दक्षिण भारत की भाषाओं में से किसी एक को तरजीह देते हुए, और अहिंदी भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषाओं एवं अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी के अध्ययन के लिए उस सूत्र के अनुसार प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

4. और जबकि यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संघ की लोक सेवाओं के विषय में देश के विभिन्न भागों के लोगों के न्यायोचित दावों और हितों का पूर्ण परित्राण किया जाए।

यह सभा संकल्प करती है कि -

र. कि उन विशेष सेवाओं अथवा पदों को छोड़कर जिनके लिए ऐसी किसी सेवा अथवा पद के कर्तव्यों के संतोषजनक निष्पादन हेतु केवल अंग्रेजी अथवा केवल हिंदी अथवा दोनों जैसी कि स्थिति हो, का उच्च स्तर का ज्ञान आवश्यक समझा जाए, संघ सेवाओं अथवा पदों के लिए भर्ती करने हेतु उम्मीदवारों के चयन के समय हिंदी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्यत होगा; और

ल. कि परीक्षाओं की योजना, प्रकिया संबंधी पहलुओं एवं समय के विषय में संघ लोक आयोग के विचार जानने के पश्चात अखिल भारतीय एवं उच्चतर केन्द्रीय सेवाओं संबंधी परीक्षाओं के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की अनुमति होगी।''

अनुवाद : अर्थ एवं महत्त्व के क्षेत्र

संकटराम ब्रम्हवंशी
प्रशिक्षु सहायक सह हिन्दी अनुवादक

अनुवाद शब्द की व्युत्पति : अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग एवं 'वाद' शब्द से मिलकर बना है, अनु + वाद = अनुवाद। अनु उपसर्ग का अर्थ होता है पीछे या अनुगमन करना तथा वाद शब्द का संबंध है वद धातु से, जिसका अर्थ होता है कहना या बोलना। इस प्रकार अनुवाद शब्द का शाब्दिक अर्थ होगा (किसी के) कहने या बोलने के बाद बोलना। आज अनुवाद शब्द को अंग्रेजी के ट्रांसलेसन शब्द के पर्याय के रूप मे ग्रहण किया जाता है।

अनुवाद का अर्थ एवं विस्तार : अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम एक भाषा मे व्यक्त विचारो को दूसरी भाषा मे व्यक्त करते है। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्त्रोत भाषा एवं जिस भाषा मे अनुवाद किया जाता है उसे लक्ष्य भाषा कहते है। अनुवाद दो भाषायों के मध्य सेतु का कार्य करता है। आज सारे विश्व मे अनुवाद की आवश्यकता का अनुभव किसी न किसी रूप मे अवश्य किया जाता है। अनुवाद दो भाषायों को ही निकट लाने का कार्य नहीं करता अपितु दो भिन्न संस्कृतियो को भी परस्पर निकट ले आता है, अनुवाद के माध्यम से हम विश्व साहित्य का परिचय प्राप्त कर सकते है। इस शताब्दी मे अनुवाद हमारी अनिवार्यता बन गयी है।

राष्ट्रिय एकता, व्यवसाय एवं प्रशासनिक क्षेत्र मे अनुवाद का महत्त्व : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास के साथ आज दुनिया भर के लोगो का आपसी संपर्क बढ़ा है। ज्ञान के क्षेत्र के अतिरिक्त व्यापार, उद्योग, पर्यटन आदि के क्षेत्र मे दुनिया सिमटकर बहुत छोटी हो गई है। भूमंडलीकरण के जमाने मे जब मनुष्य एक दूसरे की आवश्यकतायो और उनकी पूर्ति मे ज्यादा और निकट का साझीदार हुआ है तब अनुवाद की जरूरत ज्यादा बढ़ गई है । इसलिए आज के युग को अनुवाद का युग कहे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। सोच और व्यवहार के हर स्तर पर हम अनुवाद पर आश्रीत है, अनुवाद के आग्रही है।

एकता की अनिवार्य कड़ी के रूप मे भाषा की भूमिका से भला कौन इंकार कर सकता है? भारत जैसे बहुभाषी देश मे भाषा की यह भूमिका कुछ अधिक ही भास्वर है, क्योंकि अनेकता के बीच एकता के मंत्रो का उच्चार भाषा के स्तर पर करने के संकल्प अनुवाद के सहयोग से ही पूरा हो सकता है। एक साथ कई धर्मो, कई संप्रदायों, कई जातियो, कई भाषायों और कई आचार–व्यवहार के समन्वय से बना है भारत का मानचित्र। इतनी सारी विचारधारायों, परम्पराओ और ज्ञान सम्पदा के उपकरणो को मिलाकर भारत की तस्वीर बनती है। इस कार्य मे अनुवाद की उपादेयता सर्वाधिक उल्लेखनीय है। व्यवसाय एव रोजगार के क्षेत्र मे अनुवाद का महत्त्व बहुत ही व्यापक और अपरिहार्य है। व्यापार मे जहां यह अंतरभाषाई क्षेत्र मे व्यापार की दृष्टि से अपेक्षित होता है वही उद्योग के क्षेत्र मे तकनीकी एवं औद्योगिक जानकारीयो को प्राप्त करने और उसके उपयोग की दृष्टि से अपेक्षित होता है।

स्वतंत्र भारत को प्रशासन का ढांचा ब्रिटिश राज से मिला है। अंग्रेज़ो के बनाए नियम कानून सभी अंग्रेजी मे थे। साथ ही प्रशासनिक कार्यो मे लगे अधिकारियों–कर्मचारियो वर्ग को भी अंग्रेजी मे ही कम करने के आदत थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्यात जब हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया तो प्रशासन के क्षेत्र मे अनुवाद की आवश्यकता पड़ी। इस क्षेत्र मे अनुवाद का महत्त्व यही है की वर्तमान परीस्थिति मे यह एक अनिवार्यता बना हुआ है।

सफल अनुवाद की पहचान : सफल अनुवाद की सबसे पहले और अनिवार्य शर्त है की उसमे मूल पाठ का यथार्थ बोध कराने की अर्थात उसका सही–सही अर्थ व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए। अर्थ के शुद्धता के साथ–साथ भाषा की शुद्धता भी अनिवार्य है। साथ ही स्पष्टयता भी होनी चाहिए। स्पष्टयता से अभिप्राय है की भाषा पारदर्शी होना चाहिए एवं भाषिक स्वछता होनी चाहिए।

मशीनी अनुवाद एवं अनुवादक : मशीनी अनुवाद को कम्प्युटर आधारित अनुवाद भी कहा जाता है। मशीनी अनुवाद को प्रारम्भ हुए आज लगभग आधी शताब्दी बीत चुकी है। अनुवाद के लिए मशीन के उपयोग के संदर्भ मे वास्तव मे कहा जा सकता है की आवश्यकता अविष्कार की जननी है। 1940 के दशक मे (विशेष रूप से 1945 के लगभग) विश्व युद्ध के दौरान इसकी शुरुआत हुई। कम्प्युटर से अनुवाद करने के लिए मनुष्य को उसमे अपेक्षित फीडिंग करनी पड़ती है एवं समुचित आदेश देने पड़ते है। अनुवादक वह व्यक्ति होता है जो एक भाषा मे उपलब्ध जानकारी को दूसरे भाषा मे अनुवाद करता है, इस पेशे मे मुख्य रूप से अनुवादक स्त्रोत भाषा के मूल पाठ्य को सारगर्भित रूप से लक्ष्य भाषा मे अनुवाद करता है। अनुवादक मे यह योग्यता होनी चाहिए की वह एक भाषा की सामाग्री की दूसरे भाषा मे शीघ्र एवं सटीक अनुवाद कर सके।

पदनाम

हिंदी में	अंग्रेजी में
अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक	Chairman-cum-Managing Director
निदेशक	Director
कार्यपालक निदेशक	Executive Director
महाप्रबंधक	General Manager
संयुक्त महाप्रबंधक	Jt. General Manager
उप महाप्रबंधक	Dy. General Manager
सहायक महाप्रबंधक	Assistance General Manager
प्रमुख प्रबंधक	Chief Manager
वरिष्ठ प्रबंधक	Senior Manager
प्रबंधक	Manager
सहायक प्रबंधक	Assistance Manager
कनिष्ठ प्रबंधक	Jr. Manager
संपदा अधिकारी	Estate Officer
नियंत्रक अधिकारी	Controlling Officer
सम्पर्क अधिकारी	Liaison Officer

कार्मिक	Personnel
औधोगिक संबंध	Industrial Relation
पुस्तकालय	Library
विपणन	Marketing
वित्त	Finance
आंतरिक लेखा परीक्षा	Internal Audit
प्रक्रिया	Process
उत्पादन	Production
तकनीकी	Technical
प्रशिक्षण	Training
वाणिज्य	Commercial
विद्युत	Electrical
कंपनी सचिव	Company Secretary
सुरक्षा एवं पर्यावरण	Safety and Environment
यांत्रिकी	Mechanical
उत्पादन	Production
परियोजना एवं विविधीकरण	Project and Diversification

टिप्पणियाँ

अंग्रेजी में	हिंदी में
May be Approved	अनुमोदित किया जाए
May be Filed	फाइल कर दिया जाए
May be Perused	देख लिया जाए
Look into the matter	मामले को देखें
Necessary correction may be carried out	आवश्यक संशोधन कर लिया जाए
No action is necessary	कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है
Permitted	अनुमति दी गई
Please expedite your reply	कृपया उत्तर शीघ्र भेजें
Proposal accepted	प्रस्ताव स्वीकार है
Speak Please	कृपया बात करें
Submitted for information	सूचनार्थ प्रस्तुत
Case is under consideration	मामला विचाराधीन है
Agenda will follow	कार्यसूची बाद में भेजी जाएगी
Brief note is placed correct	संक्षिप्त नोट अनुलग्नक है
Do the needful	जांच की और सही पाया
Early action please	आवश्यक कार्रवाई करे
Eligibility is certified	पात्रता प्रमाणित की जाती है
Fix a date for meeting	बैठक के लिए कोई तारीख निश्चित की जाए
Follow up action should be taken soon	अनुवर्ती कार्रवाई शीघ्र की जाए
Give top priority to this work	इस काम को परम अग्रता दी जाए
I agree	मै सहमत हूँ
I disagree	मै असहमत हूँ
Information accordingly	तदनुसार सूचित करें
Issue today	आज ही जारी करें
Kindly look into it	कृपया इसे देख लें
Kindly Reply	कृपया उत्तर दें
Kindly Check	कृपया जांच कर लें
Acknowledgment awaited	पावती की प्रतीक्षा हैं

हिंदी काव्य गोष्ठी

माँयल लिमिटेड कार्यालय मे 2 मई 2022 को हिंदी संगोष्ठी एवं काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया था। कार्यकम के मुख्य अतिथि श्री प्रणव शर्मा शास्त्री इस्पात मंत्रालय हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य थे। निदेशक मानव संसाधन ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया।

निदेशक मानव संसाधन ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि आज अत्यंत हर्षोल्लास का अवसर है कि हमारे बीच आदरणीय प्रणव शर्मा शास्त्री जी उपस्थित है जोकी इस्पात मंत्रालय हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य भी है। शास्त्री जी हिंदी के प्रचार प्रसार में कई वर्षो से अपनी सेवा दे रहे है। विभिन प्रकार के व्याख्यान और काव्य गोष्ठी के माध्यम से लोगो को हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिये प्रेरित करते है।

बताया कि राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय का आदेश है कि सरकारी कार्यालयों को प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन करना आवश्यक है। इस दिशा में मायल में भी प्रत्येक तिमाही कार्यशाला का आयोजन किया जाता है जिसमे सभी विभाग से अधिकारी एवं कर्मचारी भाग लेते है, इन कार्यशालाओ में हिंदी का उपयोग करने पर अधिक बल दिया जाता है।

पिछले 2–3 सालों में राजभाषा विभाग ने अनेक पहल किये है जिसमें हिंदी के प्रयोग पर अधिक बल दिया गया और मंत्रालय द्वारा भी राजभाषा विभाग को सराहा जा रहा है। इसमे सर्वप्रथम में माँयल भारती पत्रिका का नाम लेना चाहूंगी प्रत्येक छःमाही में इसका प्रकाशन किया जाता है। अब तक छः अंक निकल चुके है। सभी अंको का अनावरण अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, सभी निदेशक गण द्वारा किया जाता है क्योकि हम यह संदेश देना चाहते है राजभाषा का प्रचार प्रसार हमारे निदेशकगण की प्राथमिकता में से एक है। पत्रिका को वर्ष 2020–21 में गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा किर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ जोकी कई दशकों में पहली बार है।

आज के कार्यक्रम के लिये मैं राजभाषा विभाग को बधाई देती हूँ और उम्मीद करती हूँ की भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा जिससे हिंदी के प्रचार प्रसार में और अधिक वृद्धि हो।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने हिंदी के प्रचार प्रसार में समस्याये पर गंभीरता से चर्चा की बहुत ही सरल भाषा में हिंदी के महत्व को समझाया, और कहा कि हमे अपनी मातृ भाषा पर गर्व होना चाहिये, हमे हिंदी बोलने

में किसी भी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिये। संगोष्ठी के तत्पश्चात काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें कवि सत्येन्द्र वर्मा, आनंद राज, दिनेश देहाती एवं प्रणव शर्मा ने अपने काव्य पाठ से लोगो का मनोरंजन किया। कार्यकम के दौरान माँयल लिमिटेड से अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, निदेशक वित्त, निदेशक मानव संसाधन, निदेशक वाणिज्य , मुख्य सतर्कता अधिकारी, मुख्य अतिथि, सभी वरिष्ठ अधिकारी कर्मचारी, माँयल कामगार संगठन के महामंत्री, सचिव, प्रतिनिधि उपस्थि त थे।

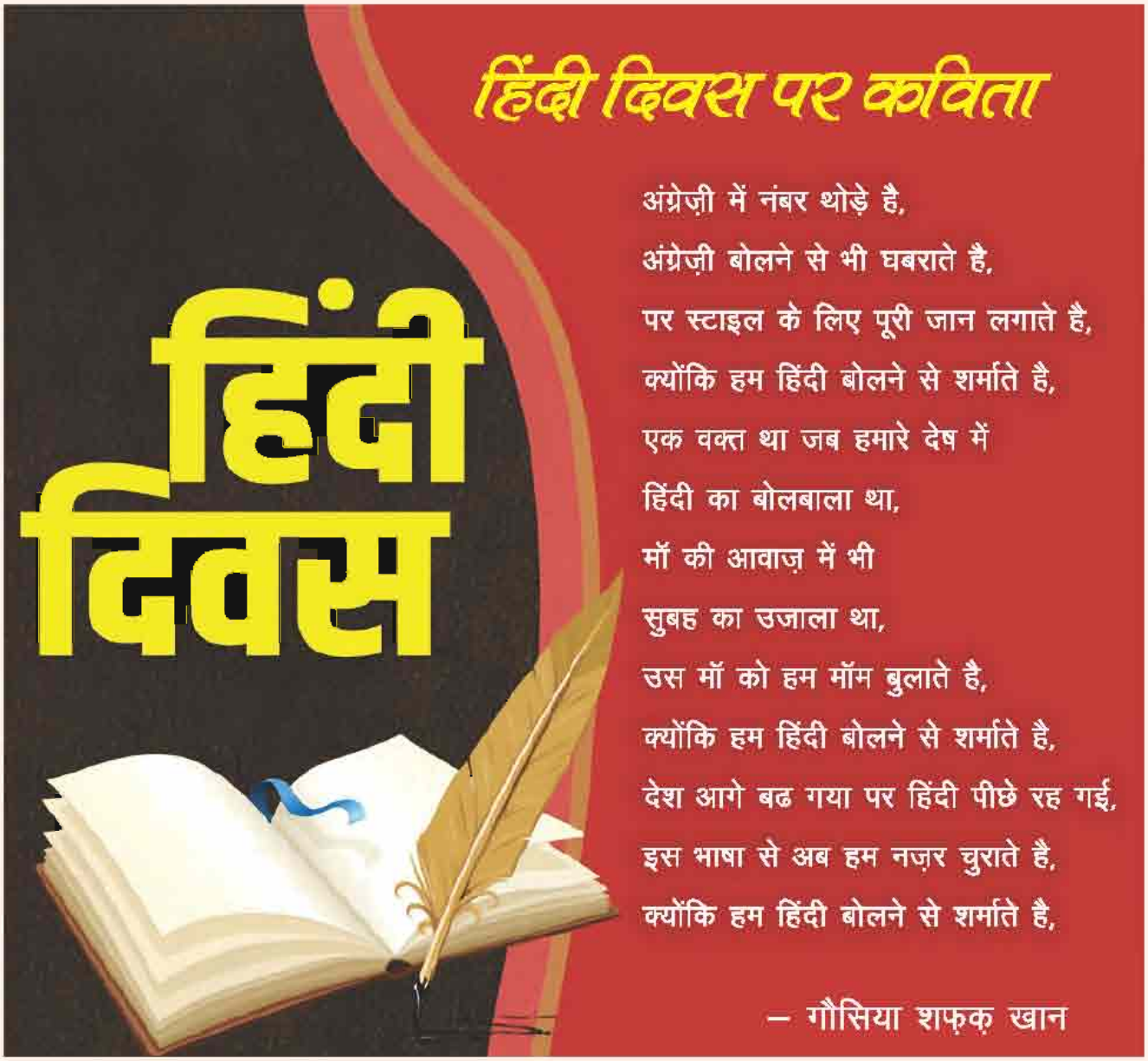

सफलता दौड़ नहीं, एक यात्रा है.....

रामअवतार देवांगन,
महामंत्री,
मॉयल कामगार संघठन (इंटक),
मॉयल लिमिटेड, नागपूर

एक सर्वे के अनुसार अधिकांश लोग तपस्या, समर्पण और स्वयं को तैयार करने में होने वाले कष्टों से दूर भागते है। और जो सफल होते है, उन्हे यह करने की सहज आदत होती है, जिन्हें असफल लोग एक बार करना पसंद नही करते।

इसलिये असफल लोग मात्र दो–चार पराजयों के बाद हार मान लेते है, जबकि सफल लोग दसों बार पराजित होते हुये भी अपना प्रयास जारी रखते है, और ग्यारहवीं बार विजयी हुये। सफलता के लिये जरूरी है, कि हम मान्यताओं और उत्तम मूल्यों का पोषण करें, विचारों की गुणवत्ता सुधारें, जीवन का उद्देश्य सदैव याद रखें। शुध्द मंशा एवं दृढ़ संकल्प के सांथ आगे बढ़ते जायें। अर्थात सफलता उन्हे ही मिलती है, जो सफलता के लिये पूरे मन से प्रयास करते है।

प्रकृति से हम असंख्य चीजें सीख सकते है। आइए हम बांस के पेड़ से ही कुछ सीखते है, जो कि इतना ऊंचा हो जाता है, मानो आकाश को ही छू लेंगा। इसमें रोचक बात यह है, कि बांस के बीजों को धरती में बोने के पांच वर्ष बाद ही उसका अंकुरण प्रारम्भ होता है। लेकिन अंकुरित होने के बाद केवल 6 हफ्तों में ही ये 90 फुट की ऊंचाई को छू लेता है। तो सोच यह है, कि बांस का बीज पहले पांच साल क्या कर रहा था?

मतलब यह कि उसने सारा निवेश धरती की गहराइयों में अपनी जड़ों को फैलाने में लगा दिया था, ताकि सतह से ऊपर होने वाले इस ऊंचे विकास के बल को वह सह सके।

कहने का तात्पर्य यह कि "सफलता कोई छोटी दौड़ नही है, बल्कि यह एक यात्रा है" जहां गंतव्य तक पहुंचने से पहले अनेंको बार असफलताओं का सामना करना पड़ता है। आपने देखा है, सुना है, काफी विज्ञापन आजकल तुरंत सफलता दिलाने का दावा करके तगड़ा पैसा वसुलने की कोशिश में लगे रहते है। ये सारे विज्ञापन आपके अंदर एक उत्कंठा पैदा करते है, कि लाटरी का टिकट खरीदो और तुरंत अरबपति बन जाओ, यह चमत्कारी भोज्य पदार्थ खालो और एक महीने में पंद्रह किलो वजन घटाओं, इंटरनेट पर रोज सिर्फ दो घंटे काम करों और सालभर में दस लाख रूपये कमा लो। दुर्भाग्य से यह सब दावे खोखले साबित होते है। फिर, सफलता कैसे पाए?

सबसे पहले हमें इस मानसिकता से बाहर आना होगा कि सफलता लाटरी की तरह है। यह स्वीकारना होगा कि सफलता के लिये समर्पण, धैर्य तथा सतत् प्रयत्न करना आवश्यक है। दुसरा इन स्वर्ण अक्षरों को याद रखें, कि संसार में कोई भी महत्वपूर्ण चीज कभी मुफ्त में नही मिलती। अगर हमारा लक्ष किसी कला में निपुण होना है, तो उसका मूल्य हैं, कि समय और ऊर्जा को अभ्यास में निवेश करना। क्योंकि "अभ्यास" ही एक ऐसी कुंजी है, जो हमारे कौशल के द्वार को खोलती है।

स्वीडीश साइकोलॉजिस्ट एवं प्रोफेसर :– के. एण्डर इरिक्शसन ने यह जानने के लिये कई विश्वविख्यात संगीतकारों, खिलाड़ीयों और नर्तकों पर रिसर्च किया कि उनके इस विलक्षण प्रतिभा का प्रमुख कारण क्या था? रिचर्स के परिणाम ने इस थ्योरी को पूरी तरह नकार दिया कि प्रसिध्द व्यक्तियों के पास कला की कोई जन्मजात सौगात होती है। प्रोफेसर ने पाया कि कुशल कलाकार और सामान्य व्यक्ति में जो अंतर होता है, वह यह है, कि किसी क्षेत्र विशेष में अपनी कार्यक्षमता को बढ़ाने का जीवन पर्यन्त अभ्यास करना, यही रहस्य है।

हालांकि जीवन में कितने घंटे का अभ्यास होना चाहिये यह व्यवसाय के आधार पर अलग–अलग होता है, और वह सफलता का एक मात्र कारण भी नही है। किन्तु फिर भी एक अन्य प्रोफेसर के मुताबिक, विश्वविख्यात कलाकार बनने के लिये जीवन में 10 हजार घंटो का अभ्यास आदर्श नियम के रूप में पाया गया है। इसका मतलब 3 घंटे रोजाना दस साल तक अभ्यास करना होंगा।

सफलता सुनिश्चित होती है, विकास की मानसिकता से, सामान्यतः हमारे मन में उन्नति का मतलब अधिक सैलरी होना, अच्छा पॅकेज होना, घर में एक बेड रूम के बजाय एक और बेडरूम होना, आधुनिक कार होना आदि–आदि ही होता है। जबकि बेहतर यह है, कि हम जीवन की हर परिस्थिति को या तो "सिखने के लिये" या फिर "विकसित होने" के अवसर के रूप में देखें। आज जब तुरंत मिलने वाले इंद्रिय–लोलूपता के अनगिनत विकल्प हमारे सामने उपस्थित हों, तब लक्ष्य के प्रति एकाग्र रहना ही हमारे विकास को सुनिश्चित करेंगा। याद रखें, हमारे विचारों की गुणवत्ता ही हमारे जीवन की गुणवत्ता को निर्धारित करती है।

कहने का सार यही है, कि "सफलता कोई दौड नहीं, यह एक यात्रा है" इसीलिये संत कबीर ने कहा है :– धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय, माली सींचे सौ घड़ा, ऋतू आये फल होय।

मेहनत एवं लगन

प्रीतम पाठक
तिरोडी माईन

किसी विद्वान ने कहा है की कामयाबी,मेहनत से पहले केवल शब्दकोष मे मिल सकती है मेहनत का अर्थ केवल शारीरिक काम से नही है, मेहनत शारीरिक व मानसिक दोनो प्रकार से हो सकती है अनुभव यह कहता है की मानसिक मेहनत शारीरिक मेहनत से ज्यादा मूल्यवान होती है।

कुछ लोग लक्ष्य **(Target)** तो बहुत बडा बना देते है लेकिन मेहनत नही करते और फिर अपने लक्ष्य को बदलते रहते है ऐसे लोग केवल योजना (Planning) बनाते रह जाते है।

मेहनत व लगन से बडे से बडा मुश्किल कार्य आसान हो जाता है अगर लक्ष्य को प्राप्त करना है तो बीच मे आने वाली बाधाओ को पार करना होगा,मेहनत करनी होगी, बार बार दृढ़ निश्चय से कोशिश करनी होगी।

"असफल लोगो के पास बचने का एकमात्र साधन यह होता है कि वे मुसीबत आने पर अपने लक्ष्य को बदल देते है"

कुछ लोग ऐसे होते है जो मेहनत तो करते है लेकिन एक बार विफल होने पर निराश होकर कार्य को बीच मे ही छोड देते है इसलिए मेहनत के साथ साथ लगन व दृढ़ निश्चय (Commitment) का होना भी अति आवश्यक है।

"अगर कोई व्यक्ति बार बार उस कार्य को करने पर भी सफल नही हो पा रहा तो इसका मतलब उसका कार्य करने का तरीका गलत है एवं उसे मानसिक मेहनत करने की आवश्यकता है"

अक्षर हिन्दुस्तान को हमें एक राष्ट्र बनाना है तो उसकी राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है। – महात्मा गांधी

माखनचोर बालकृष्ण

चितचोरी का भाव और दर्शन

डॉ. प्रणव शास्त्री
सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति,
इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार

ब्रजे बसन्तं नवनीत चौरं,
गोपांगनानां च दुकूल चौरं।
अनेक जन्मार्जित पाप चौरं,
चौराग्रगण्यं पुरूषं नमामि।।
– श्रीमद्भागवत

ब्रज में बसने वालें, हमारे माखन को चुराने वाले, गोपियों के वस्त्र चुराने वाले, हम जीवों के अनेक जन्मों के पापों का हरण करने वाले, चोरों के सरदार हे पुण्यश्लोक श्यामसुन्दर! हम सब आपको नतशीत होकर प्रणाम करते हैं। हे नंद–नन्दन! आपसे हम सब की विनती है कि हमारा चित भी चुराकर हमारा जीवन धन्य करने की कृपा करें।

प्रथमतः हमें भारत में बह रही पश्चिमी बयार के कारण फैलती जा रही अपसंस्कृति पर दृष्टिपात करना होगा। फरवरी मास की चौदह तारीख को हमारे देश के तीन या चार प्रतिशत युवक और युवतियॉ गलतबहियॉ डाले नगर–नगर में प्रेम का इजहार करते नजर आएगें। कोई इनसे पूछे कि क्या हमार भारत साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से इतना निर्धन हो गया है कि आपको प्रेम के प्रकटीकरण के लिए रोम के सन्त वैलेन्टाइन के नाम का आश्रय लेना पड़ रहा है? अरे धिक्कार है हमारे युवाओं को। क्यो इन्हें भारतीय मनीषी, चिन्तक, दार्शनिकों की सुध नहीं आती? क्यों नही याद आते वेदव्यास? क्यों नहीं स्मरण होता वशिष्ठ का, बाल्मीकि का, कणाद का, विश्वामित्र का, सांदीपन का, भारद्वाज मुनि का? अरे हम तो प्रेम के विश्व–वितरक है। हमारे यहॉ तो प्रेम की अजस्त्र–धारा अहर्निश प्रवहमान है। युग–युगों से हमारे राष्ट्र में प्रेम–सरिता बहती रही है। यदि प्रेम का स्मरण ही करना है तो क्यों याद नहीं आती गोपियॉ? जिन्होंने प्रेम के पाश में बॅधकर कान्हा को अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। कदाचित् इसी बलिदान के कारण **"गोपी प्रेम की ध्वजा"** कहलायीं। प्रेम ही क्यों क्या हमारा अहिंसा, उदारता, दया, ममता,करूणा सहिष्णुता में प्रथम स्थान नहीं है? हम तो सदा से ही **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** के अनुयायी रहे हैं। **"सर्वे भवन्तु सुखिनः"** हमारा सदा से ही सूत्र वाक्य रहा है।

प्रेम यदि सीखना ही है तो हमें प्रेम की पाठशाला गोपियों के श्रीचरणों में जाकर बैठना होगा। जहॉ वे लोक–लाज, सामाजिक मर्यादा, पति–प्रेम, पारिवारिक–बन्धन तज केवल कृष्णानुरागी हो गयीं। पर क्या आज तक किसी ने गोपियों के प्रेम पर लांछन लगाया? सभी तो उन्हें वन्द्य व पूजित मानते हैं। शायद समर्पण ही इसका मूलाधार बना। इन्हीं दैवीय गुणों के कारण ही प्रभु को भारतवर्ष ही अपने अवतार के लिए सर्वाधिक उपयुक्त देश लगा। तुलसीदास रामचरितमानस में कई स्थान पर प्रेम की महत्ता का वर्णन करते हैः–

''रामहिं केवल प्रेम पियारा
जन लेउ जो जानन हारा''

कबीर भी ऐसे ही विचार रखते हैं–**''प्रेम न बाड़ी ऊपजे''** ब्रजभाषा काव्य में तो मानो प्रेम, कवियों का प्रमुख प्रतिपाद्य ही बन गया। गोपी कृष्ण के प्रेम की चर्चा करके स्वयं को धन्य मानने वाले घनानन्द का प्रेमवर्णन विश्व–साहित्य की अमूल्य निधि है। प्रेम की पीर का जैसा मार्मिक चित्रण इन्होनें किया है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। इनकी कविता में रीतिकालीन परिपाटी की अपेक्षा निजीपन और हृदय का उल्लास अधिक है। इनकी कविता में लौकिक प्रेम का पुट अधिक है, तथापि यह रीति प्रेरित न होकर भाव प्रेरित है। सर्वाधिक प्रसिद्व इनके पद में प्रेम की कैसी अनूठी परिभाषा हैः–

अति सूधौ सनेह कौ मारग है
जहॉ नैंकु सयानप बॉक नहीं,
तहॉ सॉचे चलैं तजि आपुनपौ
झझकैं कपटी जें निसांक नहीं।
घन आनंद प्यारे सुजान सुनौ
यहॉ एक ते दूसरौ ऑक नहीं,
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला
मनु लैहु पै दैहु छटॉक नहीं।।

निम्न छन्द में भी अनुपम भाव व्यक्त हैः

तब तौ तुम दूरहिं ले मुसिकाय
बचाव कै और की दीठि हॅसे।
दरसाय मनोज कौ मूरति ऐसी
रचाय के नैननि में सरसे।।
अब तो उर मॉहि बसाय कै
मारत एजु बिसासी, कहॉ धौं बसे।
कछु नेह–निबाह न जानत हौ
तो सनेह की धार में काहे धॅसे।।

प्रेम में डूबकर व्यक्ति सुध–बुध खो बैठता है। बादल से बतियाते हुए अपनी पीड़ा घनानन्द इस प्रकार बाँट रहे हैंः–

घन आनन्द जीवन दायक हौ,
कछु मेरियौ पीर हिये परसौ।
कबहू वा बिसासी सुजान के आगॅन,
मो अॅसुवानहि लै बरसौ।।

प्रेम के विविध आयामों का सुन्दर चित्रण प्रमुख कृष्णभक्त कवि सूरदास ने किया है। गोस्वामी बिठ्टलदास जी के समक्ष गाया उनका पद उनकी कीर्तिपताका को फहरा रहा हैः

खज्जन नैन रूप रस माते।
अतिशय चारू चपल अनियारे,
पल पिंजरा न समाते।
चलि–चलि जात निकट स्त्रवनन के
उलटि पुलटि ताटॅक फँदाते।
सूरदास अंजन गुन अटके,
नतरू अबहिं उड़ जाते।।

सूर की गोपियॉ कृष्ण के निर्मोही हो जाने पर भी कृष्ण को कभी दोषी नहीं ठहरती। वे ऐसी परिस्थिति में दोषारोपण अपने ऊपर ही करती हैं और विचार करती है कि शायद हमारी प्रीति में ही कोई कमी रह गयी, इसी से कृष्ण हमें वियोगिनी बनाकर मथुरा चले गए हैं। उनका मानना है कि जितने पत्र हमने कृष्ण को लिखे वे शायद उन तक पहुॅचे ही नहीं अन्यथा कृष्ण अवश्य उनका उत्तर देते।

'सन्देसनि मधुवन कूप भरे'

एक अन्य दृश्य में राधिका अपनी उसी साड़ी का धारण किये है जिसे पहनकर उसने कृष्ण से प्रेमालाप किया था। साड़ी धोने पर उसे उन स्वेद –कणों के भी बह जाने का भय हैः

हरि श्रम जल अन्तर तेहि भीजौ,
ऐहि लालच न धुवावति सारी।

ब्रजभाषा की अन्यतम कवयित्री, गिरधर गोपाल को अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करने वाली मीराबाई का प्रेम तो जग–विश्रुत है ही। निम्न दोहा उनका जयघोष करता प्रतीत होता है:

जौ मैं ऐसा जानती प्रीति किये दुःख होय।
नगर ढ़िढोरा पीटती प्रीति न करियो कोय।।

मीरा के समस्त पद तन्मयता से भरे हुए है। इनकी प्रेमपीड़ा में निजीपन अधिक है। इन्होनें गोपियों का विरह वर्णन न कर स्वयं अपना विरह निवेदन किया है। इनके पदों से इनकी तीव्रानुभूति का परिचय मिलता है। मीरा ने अपनी तन्मयता के कारण ही इतनी ख्याति प्राप्त की है और हृदय की तीव्र सम्वेदना के कारण ही इनकी वाणी में इतना बल आ सका है। मीरा तो नन्दलाल को अपने नेत्रों में ही बसा लेना चाहती है:

बसौ मेरे नैनन में नन्दलाल।
मोहन मूरति सांवरी सूरति, नैना वने विसाल ।।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, अरून तिलक दिये भाल,
अधर सुधारस मुरली राजति, उर वैजन्ती माल।

कृष्ण के सखाभाव की उपासना करने वाले एक अन्य ब्रजभाषा कवि रसखान तो कृष्ण एंव उनकी लीलास्थली ब्रज से इतना प्रेम रखते थे कि वे चाहते थे कि मेरा पुनर्जन्म यदि हो तो हर बार ब्रज में ही हो :

मानुष हो तो वही रसखान,
वसो ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हों तो कहा बस मेरै,
चरौं नित नन्द की धेनु मँझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि को,
जु धर्‌यो कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौ तो बसेरौं करौं नित,
कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन।।

आधुनिक ब्रजभाषा काव्य के तेजस्वी हस्ताक्षर जगन्नाथ दास रत्नाकर अपने उदृव शतक में गोपियों की मनोदशा का वडा मनोहारी चित्रण करते हैं। उनकी गोपियों में सूर की गोपियो की सी वैयक्तिक प्रेमनिष्ठा और नन्ददास की गोपियो की सी तार्किकता है कृष्णसखा उदृव के गोकुल आगमन पर सब कुछ तजकर वे नन्द महल की और दौड़ पडती हैं :

भेजे मनभावन के ऊधव के आवन की
सुधि ब्रजगावन में पावन जबै लगी।
कहै रतानाकर गुवालिनि की
झौरिझौरि दौरिदौरि नन्दपौरि आवन तबै लगी।।

प्रत्येक गोपी उद्धव से अपना सन्देश सुनाने का आग्रह कर रही है यह है प्रेम की अनन्यता। वे कहती है कि हम एकनिष्ठ होकर केवल कृष्ण को ही चाहती है।

मान्यौ हम, कान्ह ब्रहा एक ही, कहौ जो तुम,
तौहू हमें भावति ना भावना अन्यारी की ।
जैहे जनि बिगरि न वारिधता वारिधि की,
बूंदता बिलैहे बूंद बिवस बिचारी की।।

रत्नाकर के उदृव शतक की रचना भमरगीत परम्परा में हुई है किन्तु उस पर आधुनिकता की छाप दिखाई देती है। उनकी गोपियाँ आधुनिक विज्ञानजन्य सन्देहशीलता व्यक्त करती हुई कहती हैं

एते वड़े विश्व माँहि, हेरे हूँ न पैये जाहि,
ताहि त्रिकुटी में नैन मूँदि लखिबौ कहौ।

जब उद्धव अपना ज्ञान सन्देश देना बन्द नहीं करते तो गोपियाँ उनसे कहती हैं, अरे उद्धव तुम व्यर्थ हीइतिहास में अपनी बदनामी करवाने पर क्यों तुले हो? समाज कहेगा उद्धव ने गोपियों को प्रेम से विरत होने की शिक्षा दी। सुख के रहे न वे दिन तो दुख द्वन्द्व की न रातें रह जाएँगी, घाते रह जाएँगी न कान्ह की कृपा ते इती, ऊधौ कहिबे कौ बस बातें रह जाएँगी।। सारतः कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण ब्रजभाषा काव्य प्रेम की पावन मन्दाकिनी में स्नान करके, आज भी जन–जन को तरंगित व आनन्दित कर रहा है यह सत्य है और यही भारतीय अवधारणा भी है।

सन्दर्भ :–

1. वृहत्तर भारत उपाध्याय : डॉ. भगवतशरण
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : बाबू गूलाब राय
3. सूरसागर : सूरदास
4. उद्धवशतक : रत्नाकर
5. गंगावतरण : रत्नाकर
6. रामचरितमानस : तुलसीदास
7. सुजान सार : घनानन्द
8. प्रेमवाटिका : रसखान
9. सुजान रसखान : रसखान
10. मीराबाई की पदावली : मीराबाई

डॉ. विजय संजय नरवाडे,
सहायक महाप्रबंधक
(चिकित्सा सेवाए) मनसर खान

सेहतमंद

हर मर्ज की दवा, दवाईयॉ है ना गोली,
चाहिए, एक मुस्कान और प्यार की बोली।

अच्छी सेहत, है संपत्ति और एक वरदान,
कामकाज के चक्कर मे रखना इसका ध्यान।

सादा खाना, स्वच्छ रहना और खबरदारी,
दूर रहेगी सर्दी–जुखाम जैसी बीमारी।

काया तो अनमोल है, मन भी स्वस्थ चाहिए,
उम्र भले ढलती रहे, मन जिंदादिल चाहिए।

नशा, बुरी लत और बुरी संगत को ना कहो,
तन और मन से सशक्त और सुदृढ रहो।

चालीस मिनट चल, कर व्यायाम और योग,
प्रतिदिन इसे करने से, दूर रहेंगे रोग।

कठिनाईयाँ कभी आयी, तो सकारात्मकता से कहना,
जीवन बहुत सुन्दर है, और हसते खेलते रहना।

मन में हो नई आशा, और सपनो मे नये रंग ,
जीवन बनेगा आसान लेकर कई नयी उमंग।

सब के लिए मंगलकामना, दुवा और प्रार्थना,
हमेशा हँसमुख, स्वस्थ और सुखी रहना।

आओ, हम सब मिलकर काम करे,
आनेवाली हर कठिनायों पर मात करे।

अकेला देखकर, ना करो किसी की बुराई,
एकजुट रहने मे है सबकी भलाई।

हर व्यक्तिमत्त्व का अपना अलग अंदाज है,
विभिन्न लोग मिल जाए तो, नई पहचान है।

एक उंगली, है अकेली और अशक्त,
पॉच मिल जाए तो, मुट्ठी बने सशक्त।

एक से बढ़कर दो, दो से बढ़कर चार,
छोटा हो या बडा, काम करो मिलनसार।

जब कोई कठिनाई आये तो, जरूर हाथ देना,
वक्त साथ दे ना दे, हम एक–दुसरे का साथ देना।

सोचो, जब मेरे मे से 'मैं' निकलेगा,
तब एक संघ होकर हम आयेगा।

राग, द्वेष, अहंकार को जड से उखाडना है,
इन्सान को, मानवता के कडी से जोडना है।

भलीभाँति हमें रखना इसका ध्यान,
देखना, हर कार्य हो जाएगा आसान।

निस्संदेह, एकता कि सोच बड़ी प्रबल है,
हम सब साथ रहे और साथ दे, तो सफल है।

भारत कि शान है, अनेकता मे एकता,
बरकरार रहे हमारा, यह प्यार भरा नाता।

दुर्योधन अभी जिंदा है

तब भी दरिंदा था और अब भी दरिंदा था,
युग बीते मगर दुर्योधन अभी जिंदा है।

उम्रभर जिसके लिए जूझता है आदमी,
क्षण भर में तिनकों–सा, बिखर जाता वो घर है,
मन के दुरूशासन भावों के शकुनि हैं हम,
महाभारत कहीं बाहर नहीं, हमारे ही भीतर है।

न मूल्य बदले न मान्यताएं,
समय का बहाव कितना मंदा है।
युग बीते मगर दुर्योधन अभी जिंदा है।

फूटती थीं जिसमें तहज़ीब की टहनियाँ,
बाबा के ज़माने का पुराना पीपल अब सूखा है,
आप सिर्फ रोटी की बात करते हैं,
मगर इस दौर का आदमी जीभ से जंघाओं तक भूखा है।

एक मन था जो मर गया वक्त के साथ,
एक तन है जो न तनिक भी शर्मिंदा है।
युग बीते मगर दुर्योधन अभी जिंदा है।

राजेश श्रीवास्तव
उप निदेशक, राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

दर्द कितने बिलबिलाए

झाँक अलस चेतना के रम्य वातायन से
जब अनायास तुम यूँ ही खिलखिलाए
कैसे कहूँ दर्द कितने बिलबिलाए।

मेरे ही थे वो आँसू और मेरी ही मुस्कानें
पर संबंधों में हमारे कहीं कुहासा रहा
जानता था स्वाति की बूंद हैं अश्रु तुम्हारे
पर चातक होकर भी मैं हाय प्यासा रहा
न मौन तोड़ सकीं तुम न मैं कुछ कह सका
यूं तो साथ साथ कहां तक चल आए
कैसे कहूँ दर्द कितने बिलबिलाए।

तुम भी चुप थीं, मैं भी चुप था,
बहुत कुछ मगर आँखों ने कहा, दिल ने कहा
समंदर अपनी मस्ती में था, सुन न सका
जो तड़पकर साहिल ने कहा।

डूबने वाले सिर्फ हम ही थे,
यूं तो तूफान बहुत से गए और बहुत से आए।
कैसे कहूँ दर्द कितने बिलबिलाए।

खोल गठरी प्यार की

बहुत कश ले लिए कुंठा के
बहुत जी ली जिंदगी उधार की,
अब खोल गठरी प्यार की।

अब तक बस रातों में जिए, घातों में जिए
गिरगिटी बातों की करामातों में जिए
तुम उजले सूरज को भी छाता दिखाते हो
हम तो नंगे बदन बरसातों में जिए
जब सागर ही भर लिया हो सीने में
तो न चिंता कर तू खार की,
अब खोल गठरी प्यार की।

आँखें बदलीं और बदल गयीं भाषाएं
वक्त क्या बदला बदल गयी परिभाषाएं
जिस दिन से तनिक होश संभाला है
घुट घुट कर मरती देखीं अभिलाषाएं
पतझड़ से समझौता करना बुरा नहीं
जब लताड़ मिले बहार की,
अब खोल गठरी प्यार की।

राजेश श्रीवास्तव
उप निदेशक, राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

कोई तो मन खोले

कोई तो मन खोले
बंद हैं कपाट तो बंद रहे लेकिन
काश कोई तो अपना मन खोले।
व्यथा है यह लज्जा अथवा डर की
हम देख नहीं पाते कमियां अंतर की
बाहर ढूंढते हैं समाधान उनका
समस्याएं हैं जो केवल भीतर की

दोष उजाले का क्या है, हमने यदि
द्वार बंद किए, वातायन खोले।
बंद हैं कपाट तो बंद रहे लेकिन
काश कोई तो अपना मन खोले।

स्वार्थ अधिक, परमार्थ कम देखते हैं,
स्वप्नजीवी हैं, यथार्थ कम देखते हैं
कृष्ण दिव्यदृष्टा हैं कुछ भी छुपा नहीं,
लेकिन हम हैं पार्थ, कम देखते हैं
मन तक कितना पहुंचा ईश्वर जाने
योग पर कितना मनमोहन बोले।
बंद हैं कपाट तो बंद रहे लेकिन
काश कोई तो अपना मन खोले।

सुख पाने की जिज्ञासा में

—कवि राधाकान्त पाण्डेय

आते हैं त्यौहार रोज ही लेकिन अपने पास नहीं हैं।
जिन यादों के साथ गुजारा अब वो लम्हें खास नहीं हैं।

कल तक पूनम रात चांदनी आज अमावस जैसा जीवन,
इस आपाधापी में मानो बिन बारिश के पावस जीवन।

मीठा पानी पीने निकले पर सागर के तट आ बैठे,
सुख पाने की जिज्ञासा में दुख के और निकट आ बैठे।।

माना पैसे पास आ गए, भौतिक साधन खूब कमाए।
पर जब गणित पढ़ा तो जाना इसके कितने मूल्य चुकाए।

जीवन जैसे रेत हाथ में जितना पकड़ो उतनी फिसले,
जो अंदर था उसे ढूढ़ने हम खुद से बाहर आ निकले।

मन की बेचौनी से लड़ने फिर अतीत के पट आ बैठे,
सुख पाने की जिज्ञासा में दुख के और निकट आ बैठे।

हमको समझ ज़रा सी कम थी हरदम मस्ती में रहते थे।
सबकी बात सुना करते थे और स्वयं दिल की कहते थे।

तब थे रिश्ते बहुत जरूरी आज ज़रूरत के रिश्ते हैं।
हर मुश्किल में साथ खड़े तब आज कहाँ अपने दिखते हैं।

जाना था जिस राह हमें हम उसके ठीक उलट आ बैठे।
सुख पाने की जिज्ञासा में दुख के और निकट आ बैठे।।

जान है तो जहान है

दिनेश कनोजे देहाती
चार्जहैंड मेकेनिकल
तिरोड़ी खान

आकस्मिक
आपदा प्रबंधन का
निःशुल्क
प्रशिक्षण शिविर
लगा था घर घर में।
मितव्ययता का
संदेश दिया था
सब ने एक दुजे को
आंखों ही आंखों में।
समय के संकट का भान
अक्षम और सक्षम को भी था,
सब शांत थे किन्तु तब।

मां की एक
ममतामई धुड़की पर
भड़क जाने वाला
भोलू भी
भोलाराम बन
उपदेश दे रहा था,
Stay home-

स्वाद की मरीचिका में
उलझकर उजुल फिलूल
व्यंजनों को चटकारते
चाचा जी को तब
घर की चटनी खूब भा रही थी।
उनके मुखारविंद से
उपदेश देती आवाज आ रही थी
सादा जीवन उच्च विचार।

झट से बोलो मेरे पास समय नहीं है
जैसे कटु शब्दों से
झटकारते महाशय
पत्नी के प्यार को
पल–पल परखने का
प्रयास कर रहे थे।
क्या ये वही महा नारी है
जो मेरे अहम को मेरा ही वहम
समझ मुस्कुरा देती थी—
उफ़, इनके कोमल हाथों ने
जीवन के कितने
कठोर कार्य संपन्न किए हैं,
आज उन हाथों को
चूम कर अपने
अक्षम्य अपराधों का
प्रायश्चित करना चाहते थे,
अपने हाथों से चुल्हा जला कर
मीठी शक्कर डाल कर
कड़वी चाय बनाते हुए।।
हमेशा की तरह क्षमा करती
भार्या के यह शब्द
प्रसाद से लग रहे थे कि
तुमसे तो इतना भी काम नहीं होता,
जाओ अपने हाथों को
२० सेकंड तक साबून से साफ करो।
मैं अच्छी चाय बना कर लाती हूं।

बालकनी पर
चहकती चिड़िया को
अक्सर उड़ा देने वाले
तब उसकी चहचहाहट का
सुक्ष्मता से अध्ययन कर रहे थे।
कि एक आवाज निकालने के लिए
वह कितनी बार
चोंच खोलती है ।।
जूतों की पालिश का ही
ध्यान रखने वाले
अब संबंधों की पालिश
कर रहे थे।

जा अपनी मम्मी से पूछ ले
कह कर अपना पिंड छुड़ाने वाला
पिता प्रतीक्षारत था—
कि उसका पुत्र उससे कुछ तो पूछ ले।।
समय बहुत बलवान है।
आसमां जमीन पर था
और
'धरती का शौर्य का आसमान छू रहा था,,
संबंधों का क्षितीज
नई भोर का सुखद संदेश दे दे रहा था।।
जान है तो जहान है।

पर्यावरण बचाओ, दुनिया बचाओ

शैलेश भिवगडे
आशुलिपिक

बिना पर्यावरण के हम पृथ्वी पर जीवन की कल्पना ही नही कर सकते। इसलिए हमे पर्यावरण की सुरक्षा को सुनिश्चित करना ही होगा। पर्यावरण पृथ्वी पर जीवन जीने के लिए प्रकृति द्वारा दी गई बहुमुल्य भेट है, इसलिए हमे अपने पर्यावरण को स्वच्छ, सुरक्षित और इसकी देखभाल करनी है हमारी धरती एक ऐसा ग्रह है जिसमे जीवन जीने का आवश्यक वातावरण है। अगर धरती पर पर्यावरण ना होता तो हमारा पृथ्वी ग्रह भी दुसरे ग्रहों की तरह होता और यहा पर भी जीवन नही होता।

आज जो हम हर सेंकड सांस लेते है, पानी पीते है, पानी जो हम अपने दैनिक कार्य में उपयोग में लाते है, पौधे जो हमे शुध्द हवा, पानी, फुल, फल और वनस्पती देते है, जानवर और अन्य जीवित चीजे यह सब हमारे पर्यावरण का ही तो महत्वपुर्ण अंग है। अगर प्रकृति के संतुलन मे किसी भी प्रकार की रूकावट आती है तो इसका सीधा असर हमारे पर्यावरण पर पडता है, जिसका हमारे जीवन पर गलत असर पडता है। पर्यावरण का संतुलन ना बीगडे यह किसी एक–दो लोगो तथा एक–दो शहर तथा एक–दो देशो की नही तो यह पुरे दुनिया की समस्या है, जो कि किसी एक के प्रयास से खत्म नही हो सकती। अगर इसका योग्य तरिके से निवारण नही हुआ तो ये एक दिन मनुष्य का अस्तित्व खत्म कर सकता है। हमे आम नागरिक को सरकार द्वारा शुरू की गया पर्यावरण सुरक्षा कार्यक्रम में भाग लेकर उसे सफल बनाने में सहयोग देना होगा, हर एक को आगे आकर पर्यावरण सुरक्षा के लिए बहुत सारे अभियानों में शामिल होकर उसे सफल बनाना होगा।

हमे पर्यावरण को स्वस्थ्य और प्रदुषण मुक्त करने के लिए अपने स्वार्थ और गलतियों को सुधारकर उसे दोहारना नही होगा और जनता को भी पर्यावरण सुरक्षा के लिए जागरूक करना होगा। हर किसी को एक छोटे से सकारात्मक आंदोलन से बिगडते पर्यावरण में एक बडा बदलाव लाना ही होगा।

वातावरण में सुधार करना हम सभी का मुख्य दायित्व होना चाहिये, क्योंकि जिस तरह से आज सडकों पर वाहनों का धुंआ निकल रहा है और वातावरण दुषित हो रहा है उस पर रोक लाने के लिए उचित कदम उठाना है। लॉकडाउन में वातावरण में काफी सुधार हुआ क्योंकि कम मात्रा में वाहन सडको पर चल रहे थे, जिससे पर्यावरण दुषित होने से बच रहा था। प्रकृति हमे ईश्वरीय शक्ती द्वारा मनुष्य को दी गई एक अतिसुंदर बहुमुल्य भेट है जिसे प्रकृति की सुंदरता को और भी सुदंर बनाए रखना हम सभी का फर्ज है।

विश्व पर्यावरण दिवस एक अभियान है जो कई सालों से हर साल 05 जून को पुरे विश्व में मनाया जाता है। इस दिन का जश्न मनाने के पीछे लोगों के बीच जागरूकता तयार करके पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सकारात्मक बडे कदम उठा सके, तांकि पर्यावरण की रक्षा ही दुनिया की सुरक्षा का मुहावरा हर एक के ओंठो पर लाना है।

विरुद्ध

एक फौजी की बेटी होने के नाते, मुझे न केवल अनुशासन के साथ बल्कि खुद पर पूरे विश्वास के साथ जीना सिखाया गया है। हर महीने आर्मी कैंटीन जाना और किराने का सामान खरीदना परिवार का सामान्य दस्तूर है। मुझे याद है जब मैं ग्रेजुएशन के प्रथम वर्ष में थी, मैं अपने पिता के लिए लिकर की लाइन पकड़ कर खड़ी थी क्योंकि वह स्मार्ट कार्ड का नवीनीकरण कर रहे थे जो कि खरीदी के लिए अनिवार्य है।

मैंने लाइन में अपने सामने तीन व्यक्तियों को जानबूझकर मेरे सामने चर्चा करते हुए सुना कि कैसे कुछ माता–पिता इतने बेशर्म हैं कि वे अपनी बेटी को शराब की कतार में खड़ा कर देते हैं। उन्होंने कहा, बेटा जाओ अपने पापा को भेजो यहा लड़कीया नहीं खड़ी होती, देखो इनके मां बाप को थोड़ी भी अकल नहीं है।

ॲड. रश्मि रवींद्र भांडारकर
डोंगरी बुजुर्ग

यह सुनकर मैं अवाक रह गई बल्कि रो पड़ी। जब मेरे पिता आए, तो मैंने उन्हें यह सब बताया तब उन्होंने मुझसे पूछा की तुमने क्या किया? मैंने कहा, मैं क्या कह सकती हूं कि मैं डर गई थी। जिस पर उन्होंने कहा कि आपको कभी भी किसी को ऐसा महसूस नहीं करने देना चाहिए कि आप कमजोर पड़ गये है। उन्होंने कहा, जब इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बन कर पूरा देश चला सकती है तो शराब की लाइन में खड़ा रहना बहुत छोटी सी बात है। जो मेरे साथ हमेशा के लिए अटक गया।

आज मै इंडिपेंडेंट क्रिमिनल लॉयर हूँ जो न सिर्फ अपना बल्कि दूसरों का भी बचाव करती हैं। एक ऐसा क्षेत्र जिसमें ज्यादातर पुरुषों का दबदबा है, मैं जानती हूं कि मुझे अपने लिए स्टैंड कैसे लेना है। अगर उस दिन मेरे पिता ने मेरा साथ नहीं दिया होता, तो मैं यहां नहीं होती जहां मैं आज हूं। अंत में, मैं सभी लड़कियों से कहना चाहूंगी कि अपने सपनों को पूरा करने से डरो मत। हमारे समाज के राक्षसों को आपके जीवन का न्याय न करने दें और न ही आपको नीचे खींचने दे। मै ऐसा सोचती हु की हम जितना सोचते हैं, उससे कई ज्यादा मजबूत हैं। मैं मेरे पिता द्वारा कहे गए शब्दों को उद्धृत करना चाहूंगी लड़कीयो पतंग नहीं पंछी हो तुम, तुम्हारी डोर किसी के हाथ में नहीं है।

पिता के लिए दो शब्द

– गितु पटले

जाते जाते वो अपने जाने का गम दे गये.....
सब बहारे ले गये रोने का मौसम दे गये.....
ढुंढती है निगांहे पर अब वो कही नही
अपने होने का वो मुझे कैसा भ्रम दे गये
मुझे मेरे पापा की सूरत याद आती है.....
वो तो ना रहे अपनी यादों का सितम दे गये
एक अजीब सा सन्नाटा है आज कल मेरे घर में
घर की दरो दिवार को उदासी पेहागाम दे गये
बदल गयी है अब तासीर .तासीर जिन्दगी की.....
तूम क्या गये आंखो में मन्जरे मातम दे गये।

जल

श्री. पी. के. मिश्रा
उप. महा. प्रबंधक (रसायन)
मुख्यालय (नागपुर)

पृथ्वी की उत्पत्ति व मानवीय सभ्यता के विकास मे जल की अहम भूमिका रही है। जल को हमारे प्राचीन ग्रंथो मे विदित पाँच तत्वो (जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश) मे स्थान दिया गया है। जिसमे मानव शरीर की रचना हुई है। यह सारे प्राणियों के जीवन का आधार है। बिना जल के हमारे अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जल एक प्राकृतिक संपत्ति है। आधुनिक भौतिक विज्ञान के अनुसार जल की उत्पत्ति हाइड्रोजन+ऑक्सीजन इन दो गैसो पर विद्युत् की प्रक्रिया के कारण हुई है। पौराणिक सिद्धान्त के अनुसार वायु और तेज़ की प्रतिक्रिया के कारण जल उत्पन्न हुआ है। यदि वायु को गैसो का समुच्चय एवं तेज़ को विद्युत माना जाए तो दोनों ही सिद्धांतो मे कोई अंतर नहीं है।

जल की संरचना : जल या पानी एक रासायनिक पदार्थ है। जिसका अणु दो हाइड्रोजन और एक ऑक्सीजन परमाणु से बना है। रसायनिक सूत्र H2O है।

क्वथनाक	100 डिग्री सेल्सियस
गलनाक	0 डिग्री सेल्सियस
घनत्व	997 Kg / m3-
मोलर द्रव्यमान	18. 01528 g / mol-

IUDAC oxiden, water

जल का रासायनिक नाम हाइड्रोजन ऑक्साइड है। जल का अणु भार 18 है। शुद्ध जल रंगहीन, गंधहीन होता है। जल मीठा होता है। जल मे लवण (नमक) की मात्रा बढ़ाने पर जल नमकीन हो जाता है। कुछ पढ़ार्थों की गंध के कारण पानी मे भी गंध आ जाता है। जल मे अधिकतम पदार्थ घुलनशील होते है। इसी कारण जल को महान विलायक कहते है।

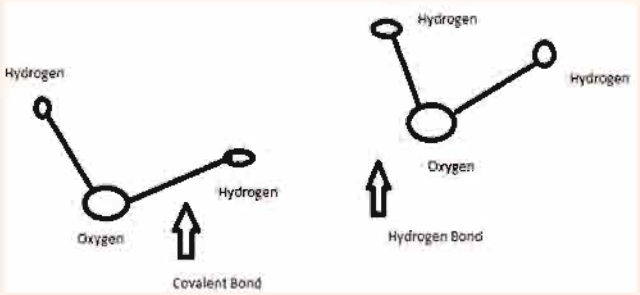

रासायनिक दृष्टि से जल, ऑक्सीजन और हाइड्रोजन का मिश्रण (1:2) अनुपाद मे होता है।

जल के पोषण तत्व : जल मे औषधीय गुण विद्धमान होता है। तथा जल मिनरल्स से भरा होता है। इसमे सल्फर, मग्निशियम और कैल्सियम पाया जाता है, जो सभी चीजे स्वास्थ के लिए फायदेमंद होती है। मिनरल

युक्त जल पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है, और स्वाद मे भी बढ़िया होता है। शुद्ध जल या पानी का PH 7 होता है। सामान्य रूप से 7 से कम PH के साथ पानी अम्लीय माना जाता है, और 7 से अधिक PH के साथ मूल माना जाता है। विश्व मे जल ही ऐसा पदार्थ है। जो तीनों अवस्थाओ मे जैसे ठोस, द्रव एवं गॅस मे पाया जाता है। ठोस अवस्था मे हिम खंड, बर्फ का पहाड़, द्रव अवस्था मे झरनो, तालाबो, नदियों तथा गॅस अवस्था मे भाप के रूप मे पाया जाता है।

शुद्ध जल एक पारदर्शक, रंगहीन तथा गंधहीन द्रव्य है। ठंडा करने पर जल का तापमान 4 डिग्री सेल्सियस तक घटता है। फिर बढ़ने लगता है। 4 डिग्री सेल्सियस पर जल का घनत्व उच्चतम होता है।

पीने के पानी की मानक गुणवत्ता

क्रमांक	पैरामीटर	पीने का पानी	
		स्वीकृति सीमा	अधिकतम सीमा
1	सुगंध	सहमति के अनुसार	सहमति के अनुसार
2	स्वाद	सहमति के अनुसार	सहमति के अनुसार
3	पी.एच .	6. 5to8 .5	6. 5to8 .5
4	टी. डी. एस. (mg/l)	500	2000
5	कठोरता as CaCo3 (mg/l)	200	600
6	क्षारीयता as CaCo3(mg/l)	200	600
7	नाइट्रेट (mg/l)	45	45
8	सल्फ़ेट (mg/l)	200	400
9	फ्लोराइड (mg/l)	1	1.5
10	क्लोराइड (mg/l)	250	1000
11	अविलता (NTU)	5	10
12	आर्सेनिक (mg/l)	0.01	0.05
13	कॉपर (mg/l)	0.05	1.5
14	कैडमियम (mg/l)	0.003	0.003
15	क्रोमियम (mg/l)	0.05	0.05
16	आयरन (mg/l)	0.3	0.3
17	ज़िंक (mg/l)	5	15

वैसे तो पृथ्वी पर 70% भाग पानी है। लेकिन उनमे सिर्फ 1% पानी हमारे लिए उपयोगी है। इसलिए पानी/जल का सही मात्रा मे उपयोग करना बेहद आवश्यक है। हमे हमारे दैनिक जीवन के लिए सुबह से रात तक जल की जरूरत रहती है। इनमे से ज्यादातर जल हम बिना उपयोग व्यर्थ करते है। जल को बचाने की जिम्मेदारी हम सभी की है। जल की कमी का सीधा असर कुदरत के संतुलन पर पड़ता है। बिगड़ा हुआ कुदरत का संतुलन पृथ्वी के हर जीव को संकट की ओर ले जाता है। शुद्ध जल बहुत सीमित मात्रा मे है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण वर्षा ऋतु का चक्र भी असमतल हो गया है। एक सर्वे के अनुसार दुनिया मे भारत जल संकट से गुजरने वाला 13 वा देश है। इससे हमे पता चलता है, की भावी पीढ़ी बिना जल के कारण संकट से गुजरने वाली है। इसलिए हमे वर्तमान समय मे जल और उसके प्रयोग एवं बचाव के बारे मे रचनात्मक चिंतन की अवश्यकता है। क्योकि जल हमारे जीवन का एक आधार स्तम्भ है। अतः वर्तमान समय मे जल का सही उपयोग और उसको बचाना निश्चित ही हमारे सुनहरे भविष्य को सुनिश्चित करेगा।

रहीम जी की निंम्न कविता भी यही इंगित करती है।

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून,
पानी गए ना उबरे, मोती मानस चुन"

उपरोक्त पर चिंतन एवं रचनात्मक चिंतन और तकनीकी प्रयोग की निरंतर आवश्यकता है।

बधाई

कुमारी श्रीप्रिया मिश्रा
कक्षा 7

सेंट जोसफ कानवेंट सीनियर सेकेण्डरी स्कूल नागपुर के कक्षा 7 के मेघावी छात्रा श्री प्रिया मिश्रा ने Science Olympiad Foundation के द्वारा आयोजित International mathematics Olympiad 2021–2022 के लिए Mathematics मे Gold medal of excellence का पुरस्कार हासिल किया है । इसके अलावा National Cyber Olympiad 2021–2022 के लिए Medal of Distinction + Certificate of Distinction का पुरुष्कार भी हासिल किया है। श्री प्रिया मिश्रा जो की मुख्यालय मे कार्यरत श्री पी. के. मिश्रा, उप महाप्रबन्धक (रसायन) की पुत्री है। और इनका मानना है की सफलता के लिए कोई सरल रास्ता नहीं है। मायल इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

पछतावा

भारती पिल्ले
व. आशुलिपिक

राजवीर मंदिर मे बैठे कुछ सोच रहा हैं। तब ही एक व्यक्ति आता हैं उसके हुलिये को देख कह सकते हैं वो एक मुस्लिम हैं। वो मंदिर मे आकर पुजा करता हैं। उसे देख एक ही सवाल दिमाग पर दस्तक देता हैं। एक मुस्लिम मंदिर मे कैसे?

वही एक सवाल राजवीर को उसकी सोच से बाहर निकालता हैं और वो उस शख्स की तरफ देखता ही हैं कि वह शख्स उस अनपुछे सवाल को भाँप लेता हैं और वही मंदिर की डेल पर राजवीर के पास बैठ जाता हैं। और खुद ही कहता हैं। मेरा नाम अशफाक़ हैं मैं मुस्लिम समाज से हूँ रोजाना मंदिर आकर पुजा करता हूँ। राजवीर सुनकर आश्चर्य से पूछता हैं, यह अनोखा हैं, क्या इसके पीछे कोई कारण हैं, अशफाक़ मुस्कुराते हुये जवाब देता हैं। बरखुरदार! हर एक बड़े काम या बदलाव के पीछे वजह जरूर होती हैं। यहाँ भी हैं। हमारी बीवी हिन्दू थी। उन्होने हमारे धर्म को दिल से अपनाया। यही एक उम्मीद उनकी आंखो मे हमारे लिए भी थी। पर हम जानकर भी अंजान बने रहे, क्यूंकि यह हमारी शान के खिलाफ जो था। वो जीवन भर हमारे खातिर अपने भगवान से दूर रही और एक दिन वो हमसे दूर अपने भगवान के पास ही चली गई। उन्होने हमे एक खत लिखा था, जो उनके इंतकाल के बाद हमे मिला। उसमे लिखा था उन्हे अपने ईश्वर से बहुत प्रेम था वो हमसे छिपकर यहाँ इस मंदिर मे आ जाया करती थी। हमे बुरा ना लगे इसलिए कभी बोल नहीं पाई पर धोखा नहीं देना चाहती थी इसलिए खत लिख दिया। उन्होने हमारे प्यार के खातिर हमारे अभिमान के खातिर अपनी इच्छा कभी ज़ाहिर ना की. पर मरते–मरते वो हमे सच कह कर गई. तब हमे प्यार की कीमत समझ आई. इसलिए उनके जाने के बाद ही सही पर हमने उनकी वो एक इच्छा पूरी की. अशफाक़ की बात खत्म हो जाती हैं। दोनों कुछ देर खामोश बैठ जाते हैं।

अशफाक़ की बातों से राजवीर के चेहरे पर बैचेनी सी हैं जिसे देख अशफाक़ राजवीर से पूछता हैं, जनाब! आप कुछ परेशान से लग रहे हो. राजवीर कुछ असहज सा हो जाता हैं, और कहता हैं, नहीं! ऐसा कुछ नहीं.अशफाक़ कहता हैं–बरखुरदार! आपकी बैचेनी देख कह सकता हूँ आप किसी सच से ही भाग रहे हो. राजवीर तेजी से वहाँ से उठकर जाने लगता हैं जैसे अशफाक़ ने उसकी कोई चौरी पकड़ ली हो। अशफाक़ उसे रोकता हैं पर राजवीर तेजी से वहाँ से निकलकर अपनी कार मे बैठकर चला जाता हैं।

राजवीर के दिमाग मे अशफाक़ की सारी बाते घूमने लगती हैं। राजवीर को रातभर नींद नहीं आती। सुबह होते ही वो फिर उसी मंदिर मे जाकर बैठ जाता हैं। फिर से उसकी मुलाक़ात अशफाक़ से होती हैं। अशफाक़ राजवीर के पास आकर बैठ जाता हैं।

अशफाक़ समझ रहा हैं कि राजवीर उससे कुछ कहना चाहता हैं पर अशफाक़ चाहता हैं राजवीर खुद अपने अभिमान को तोड़कर सच को उनके सामने रखे, जिससे वो भाग रहा हैं। पर वहीं राजवीर चाहता हैं अशफाक़ उससे आगे से सवाल करे। पर राजवीर कुछ नहीं बोल पाता। दो तीन दिनों तक यही चलता रहता हैं– आखिरकार एक दिन राजवीर खामोशी तोड़कर बोलता हैं, असल मे मेरी नौकरी मे थोड़ी दिक्कत हैं बस इसलिये परेशान हूँ, अशफाक़ ज़ोर–ज़ोर से हँसने लगता हैं, बरखुरदार! इतने दिनों बाद अपनी खामोशी तोड़ी भी तो झूठ बोलने के लिये। मियां! हमारे बाल धूप मे सफ़ेद नहीं हुये हैं। आपका चेहरा साफ कह रहा हैं आप खुद से खफा हैं। खुद की गलती मानने की हिम्मत नहीं हैं, आप इस पुरुष प्रधान समाज के वही पुरुष हैं जो अपने मन रूपी अकड़ मे इतने जकड़ गए कि सच को स्वीकार नहीं कर पाते. अशफाक़ राजवीर को उसके ही असली रूप से पहचान करवाता हैं। राजवीर के दिल पर एक बोझ हैं जिसे वो खुद से भी खुलकर नहीं कह पाया हैं और आज वो अपने जीवन के उस एक पहलू को अशफाक़ के सामने रखता हैं और कहता हैं।

मैं एक मॉडर्न लड़की से शादी करना चाहता था। पर मेरे माता–पिता ने मेरी शादी गाँव की लड़की शिखा से करवा दी। मैं उससे ठीक से बात तक नहीं करता था। वो मेरे परिवार के साथ ऐसे घुलमिल गई थी जैसे बरसो से उनके साथ रह रही हो मुझे ये भी पसंद नहीं आ रहा

था। फिर भी वो मेरी हर जरूरत को बिना मेरे कहे पूरा कर देती थी। मैं तरक्की पर तरक्की कर रहा था. मुझे अपने आप पर बहुत अभिमान था। एक दिन नशे मे धुत्त घर आकर मैंने शिखा के साथ बदसुलूकी की। मैंने कहा–तुम मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती हो। शरम आती हैं मुझे जब तुम्हें पत्नी कहना पड़ता हैं. मैं बोलता ही गया। शिखा के लिए यह सब नया नहीं था।

पर मेरे माता–पिता के लिए ये एक कड़वे घुट के समान था। बिना मुझसे बात किए वो शिखा को अपने साथ ले गए। मैंने ऐसे बरताव किया जैसे मुझे काले पानी की सजा से मुक्ति मिल गई हो। जाते वक्त शिखा ने मेरी मेज पर एक डायरी रखी थी जिसमे मेरी सारी जरूरतों की लिस्ट थी। यह देखकर मुझे गुस्सा आ गया, क्या समझती हैं वो खुद को मैं क्या उस पर निर्भर करता हूँ फिर मैंने सोचा–मैं क्यू चिड़ रहा हूँ। वो तो थी ही गंवार अब चली गई। मैं आजाद हूँ ऐसा सोच मैं ऑफिस चला गया। ऑफिस मे लंच ब्रेक मे जैसे ही मैंने टिफिन खोला। मैंने उस महक को मिस किया जो रोजाना मेरे थके चेहरे पर मुस्कान बिखेर देती थी। एक पल के लिये मुझे एक अजीब सी कमी महसूस हुई पर उस वक्त मुझे अपनी आजादी का गुमान ज्यादा था।

समय गुजर रहा था मैं अपनी हर एक जरूरत के लिए डायरी पर डिपेंड करता था। कमी का कुछ अहसास तो था पर मेरा इगो मेरे सामने आ जाता और मैं फिर अपनी अकड़ मे जीने लगता। मै परेशान जब हो गया जब मेरा वर्किंग परफॉर्मेंस बिगड़ने लगा। हमेशा अपनी उन्नती के लिए खुद को सारा क्रेडिट देता था। मैं ये मानना ही नहीं चाहता था कि मेरी प्रोग्रैस मे शिखा का भी पूरा हाथ था. उसी के कारण मैं अपने जीवन की कई छोटी बड़ी परेशानियों और जिम्मेदारियों से बहुत दूर था और केवल अपने काम पर फोकस करता था। बेस्वाद खाने मे मुरझाये फूलों मे बिखरे घर मे हर उस जगह जहां मैं शिखा को देख चिड़ता था उसे गंवार कहकर निकल जाता था मुझे उसकी कमी महसूस होने लगी थी पर मैं ये मान कैसे लेता।

एक दिन मन भारी हो गया फिर मैंने माँ को कॉल किया। वो मेरी आवाज से ही समझ जाती थी कि मैं परेशान हूँ पर समझते हुये भी माँ ने मुझे इगनोर कर दिया और कहा कि शिखा ने दूसरी शादी का फैसला कर लिया हैं। यह सुनकर मुझे और गुस्सा आ गया और मैंने कॉल कट कर दिया। कुछ दिनों पहले ही मुझे डाक से तलाक से कागज मिले। पता नहीं क्यूँ मैं खुश नहीं हूँ. मैं चाहता तो यही था कि शिखा मेरी ज़िंदगी से दूर हो जाये पर आज मैं बैचेन हूँ।

अशफाक़ थोड़ी देर रुककर कहता हैं, अब तुम क्या सोच रहे हो राजवीर कहता हैं, शिखा मुझसे बहुत प्यार करती थी फिर वो कैसे दूसरी शादी के लिये सोच भी सकती हैं अशफाक़ कहता हैं दृ वाह मियां ! क्या अभी भी वो आपसे पुछेगी कि आगे बढूँ या नहीं आज जब आपको उसकी अहमियत पता चल गई हैं तब भी उससे सच कहने से झिझक रहे हो। सब कुछ सामने हैं. पर फिर माफी मांगने मे खुद को छोटा महसूस कर रहे हो। मियां ! समझ लों अगर अब भी अपने अहंकार मे रहे तो फिर मौका नहीं मिलेगा। दोस्तों आदमी का यह अहंकार ही उसे ज़िंदगी से हरा देता हैं. राजवीर सब जानता हैं पर उसके अहम के कारण वो शिखा से बात नहीं कह पा रहा हैं. शायद उसे डर हैं कि इस बार शिखा उसे ना न कह दे।

अशफाक़ राजवीर को झँझोड़ कर कहता हैं, जब मैं अशफाक़ होकर मरी हुई बीवी के खातिर मंदिर जा सकता हूँ तो क्या तुम एक सच स्वीकार नहीं कर सकते। राजवीर को अशफाक़ की बात दिल पर लग जाती हैं वो कॉल तो नहीं पर शिखा को एक मैसेज करता हैं मैसेज डेलीवर होते ही,उधर से कॉल आ जाता हैं। दोनों के बीच लंबी बात होती हैं. और यह एक लंबा कॉल दोनों को वापस मिला देता हैं।

दोस्तो एक टेक्स्ट के बाद शिखा एक पल नहीं रुकती और कॉल कर देती हैं. यह एक औरत का दिल हैं वो जिससे प्यार करती हैं उसे कभी नहीं झुकाती और वहीं एक आदमी हर उस औरत को झुकाता हैं जो उससे प्यार करती हैं।

कहानी से शिक्षा

वक्त किसी का बंधक नहीं वक्त रहते काम हो जाए तो वह अमूल्य है वरना पछताने के अलावा कुछ नहीं रह जाता." जीवन में जो भी मिले उसे स्वीकारने की कोशिश करे जरुरी नहीं हर चीज जो आप चाहते है वहीँ आपको मिलेगा. लेकिन जो आपको मिला है वह आपकी किस्मत है जिसे अच्छा बुरा बनाना केवल आपके हाथ में है।

मानव संसाधन : वर्तमान अवधारणा

अमित कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक)
डोंगरी बुजुर्ग खान

मानव संसाधन (HUMAN RESOURCES) वह अवधारणा है जो जनसंख्या को अर्थव्यवस्था पर दायित्व से अधिक परिसंपत्ति के रूप में देखती है। शिक्षा प्रशिक्षण और चिकित्सा सेवाओं में निवेश के परिणाम स्वरूप जनसंख्या मानव संसाधन के रूप में बदल जाती है। मानव संसाधन उत्पादन में प्रयुक्त हो सकने वाली पूँजी है। यह मानव पूँजी कौशल और उनमें निहित उत्पादन के ज्ञान का भंडार है। यह प्रतिभाशाली और काम पर लगे हुए लोगों और संगठनात्मक सफलता के बीच की कड़ी को पहचानने का सूत्र है। यह उद्योग/ संगठनात्मक मनोविज्ञान और सिद्धांत प्रणाली संबंधित अवधारणाओं से संबद्ध है।

इसका मूल अर्थ राजनीतिक अर्थव्यवस्था और अर्थशास्त्र से लिया गया है, जहां पर इसे पारंपरिक रूप से उत्पादन के चार कारकों में से एक श्रमिक कहा जाता था, यद्धपि यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय स्तर पर नए और योजनाबद्ध तरीकों में अनुसन्धान के चलते बदल रहा है। पहला तरीका अधिकतर मानव संसाधन विकास शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है और यह सिर्फ संगठनों से शुरू हो कर राष्ट्रीय स्तर तक हो सकता है। पारम्परिक रूप से यह कारपोरेशन व व्यापार के क्षेत्र में व्यक्ति विशेष (जो उस फर्म या एजेन्सी में कार्य करता है) के लिए, तथा कंपनी के उस हिस्से को जो नियुक्ति करने, निकालने, प्रशिक्षण देने तथा दूसरे व्यक्तिगत मुद्दों से सम्बंधित है व जिसे साधारणतया: "मानव संसाधन प्रबंधन" के नाम से जाना जाता है। यह लेख दोनों परिभाषाओं से सम्बंधित है।

मानव संसाधनों के विकास का उद्देश्य मानव संसाधन संपन्नता को प्रबुद्ध और एकजुट नीतियों के माध्यम से शिक्षा, प्रशिक्षण, स्वास्थ्य और रोजगार के सभी स्तरों को कॉर्पोरेट से ले कर राष्ट्रीय स्तर तक बढ़ावा देना है। मानव संसाधन प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य कंपनी के कर्मचारियों पर हुए निवेश से अधिकाधिक लाभ सुनिश्चित करना तथा वित्तीय जोखिम को कम करना है। एक कंपनी के संदर्भ में मानव संसाधन प्रबंधकों की यह जिम्मेदारी है कि वे इन गतिविधियों का संचालन एक प्रभावशाली, वैधानिक, न्यायिक तथा तर्कपूर्ण ढंग से करें। संगठनों में प्रमुख कर्मचारियों और आकस्मिक कार्यबल, दोनों की कुशलता/तकनीकी योग्यता, क्षमता, लचीलापन इत्यादि के विश्लेषण के लिए वर्तमान और भविष्य की संगठनात्मक आवश्यकताओं का निर्धारण महत्वपूर्ण है।

इस विश्लेषण में आंतरिक तथा बाह्य कारकों, जिनका संसाधनों की खोज, विकास, प्रेरणा तथा कर्मचारियों तथा अन्य वर्करों के संरक्षण पर प्रभाव पड सकता है, की आवश्कता पड़ती है। बाह्य कारकों में संगठन के नियंत्रण से बाहर के कारक और दूसरे मुद्दे जैसे आर्थिक वातावरण, श्रमिक बाज़ार के वर्तमान तथा भविष्य के ट्रेंड जैसे कि कुशलता, शिक्षा का स्तर, उद्योगों में सरकारी निवेश इत्यादि आते हैं।

दूसरी ओर आंतरिक प्रभाव मुख्यत: संगठन के नियंत्रण में होते हैं ताकि लक्ष्य के निर्धारण की भविष्यवाणी तथा उसका अवलोकन किया जा सके। उदाहरण के लिए – संगठन की संस्कृति का पता प्रबंधन व्यवहार (या शैली), पर्यावरण और जलवायु, तथा कारपोरेट की नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति दृष्टिकोण से चलता है।

कर्मचारी की नियुक्ति एक संगठन की समग्र संसाधन जुटाने की योजनाओं का एक प्रमुख हिस्सा है जिसका उद्देश्य संगठन को बनाये रखने के लिए लोगों की पहचान करना तथा लघु अवधि से ले कर माध्यम अवधि तक उन्हें संरक्षण देना है। नियुक्ति की

गतिविधियों को हमेशा बढ़ते हुए प्रतियोगी बाजार के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए ताकि सभी स्तरों पर सुयोग्य और सक्षम लोग आसानी से मिल सकें. इन प्रयासों को प्रभावी बनाने के लिए यह जानना ज़रूरी है कि आंतरिक या बाह्य स्रोतों से योग्य लोग कैसे और कब ढूँढने हैं।

सफलता के सूत्र हैं – एक अच्छी नौकरी की रूप रेखा के साथ सही ढंग से परिभाषित संगठन का ढांचा, कार्य की सही परिभाषा तथा व्यक्ति तथा विविध चयन प्रक्रियाओं का विवरण, ईनाम, रोज़गार सम्बन्ध तथा मानव संसाधन नीतियां, मजबूत ब्रांडिंग नियोक्ता की प्रतिबद्धता तथा कर्मचारी की वचनबद्धता।

आंतरिक भर्ती नियुक्तियों का सबसे सस्ता स्रोत है यदि मौजूदा कर्मचारियों की क्षमता प्रशिक्षण, विकास तथा अन्य प्रदर्शन बढ़ाने वाली क्रियाओं से बढ़ाई गयी है – जैसे प्रदर्शन मूल्यांकन, उत्तराधिकार योजना बनाना तथा विकास केन्द्रों द्वारा प्रदर्शन की जांच ताकि कर्मचारी के विकास की आवश्कताओं को तथा पदोन्नति क्षमता को समझा जा सके।

मानव संसाधन विकास एक संरचना है जो संगठन के, या राष्ट्र के लक्ष्यों को संतोषजनक ढंग से पूरा करने के साथ व्यक्ति विशेष के विकास की अनुमति देता है। व्यक्ति के विकास से व्यक्ति विशेष तथा संगठन दोनों, या राष्ट्र और उसके नागरिकों को लाभ होगा। कॉर्पोरेट दृष्टिकोण के अनुसार, मानव संसाधन ढांचा कर्मचारी को उद्योग की संपत्ति (एसेट) की तरह देखता है जिसकी कीमत विकास के साथ बढ़ती है। इसका प्राथमिक ध्यान विस्तार तथा कर्मचारी का विकास है।..

यह व्यक्ति की क्षमता और कौशल विकसित करने पर जोर देता है (एल्वुड, ओल्टों व ट्रोट 1996)। इस प्रक्रिया में मानव संसाधन विकास का अर्थ वाँछित परिणाम पाने के उद्देश्य से समूह प्रशिक्षण, व्यवसायिक पाठ्यक्रम या व्यक्ति विशेष के प्रदर्शन के विकास के लिए वरिष्ठ कर्मचारियों द्वारा प्रशिक्षण या सलाह हो सकता है। एक राष्ट्रीय नीति के स्तर पर, राष्ट्रीय उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए यह एक व्यापक रचनात्मक योगदान हो सकता है।

माता–पिता

गितु पटेल

माता–पिता भगवान की दिए हुए सबसे अनमोल उपहार है। माता पिता का स्थान हर व्यक्ति के जीवन में भगवान से भी पहले आता है और यह पुजनीय है। माता–पिता का प्यार निस्वार्थ होता है। और वह हमारी खुशियो के लिए अपनी खुशियों को त्याग देते है। बच्चे चाहे कितनें भी बडें हो जाए पर वह मॉ बाप के लिए हमेशा छोटे ही रहते है। दुनिया का कोई भी रिश्ता झुठा हो सकता है लेकिन मॉ बाप का रिश्ता हमेशा सच्चा होता है। माता पिता हमेशा अपने बच्चों को सफल होते हुए देखना चाहते है। और उनकी जरूरतें पुरी करते है।

माता पिता दिन रात हमारे लिए कार्य करते है और हर मुसीबत को हमारे तक आने से पहले ही रोक देते है। माता पिता का अपने बच्चों के साथ एक पवित्र रिश्ता होता है। सिर्फ माता पिता ही होते हैं जो हमें जीवन देते हैं। और अच्छें संस्कार से सींचतें है। हमारे जन्म से लेकर उनकी मृत्यु तक वह हर कदम पर हमारे साथ होते है। वह हमे संस्कार देकर इस समाज में रहनें योग्य बनाते है और हमारा सही मार्गदर्शन करते है। माता पिता की ममता और त्याग का कर्ज हम कभी नहीं चुका सकते है। पर हमें भी उन्हे खुश रखने की कोशिश करनी चाहिए। आधुनिक समय में लोग माता पिता के महत्व को भूलते जा रहे है। बच्चे बडे होते मॉ बाप का प्यार भूल जाते है। और उन्हे वृदाश्रम छोड आते है। जो कि बहुत गलत है।

माता पिता का निरादर भगवान के निरादर के समान है। हमें अपने माता पिता का कहना मानना चाहिए और उन्हे खुश रखना है। माता पिता अद्वितीय है। उनके समान दुनिया में दुसरा कोई भी नही है। हमें हमेशा अपने माता पिता का सम्मान करना चाहिए क्योकि वह जीवन में सिर्फ एक बार ही मिलते है।

महिलाए खुद को देंगी वक्त तो जिंदगी होगी बेहतर

हेमलता साखरे
आशुलिपिक
विपणन विभाग

ऑफिस की जिम्मेदारी, घर का काम, बच्चों की परवरिश और न जानें क्या–क्या। लेकिन इन सबके बीच आपने खुद के लिए क्या किया? बस, तनाव ही तो झेला, क्योंकि काम और निजी जिंदगी के बीच आप संतुलन स्थापित नही कर पाई...

एक महिला है, जिसके आठ हाथ हैं। एक में बेलन, एक में बस्ता, एक में ऑफिस की फाइल। इस प्रकार हर हाथ में कुछ–न–कुछ थामे वह खड़ी है। इंटरनेट पर अकसर ऐसी तस्वीर वायरल होती है, खासतौर से महिला दिवस जैसे मौको पर। काम तो पुरूष भी करते है, पर उनके लिए ऐसी कोई तस्वीर क्यों नही बनी? जवाब हम सभी के पास है। पुरूष कलछी उठा लें, तो वो उनका शौक होता है, लेकिन महिलाओं के लिए ये एक बड़ी जिम्मेदारी है। देखा जाए तो हमारे समाज में पुरूष के मुकाबले महिलाओं से ज्यादा उम्मीदें होती है। अगर वह बाहर का काम संभाल रहीं है, तो भी घर की जिम्मेदारी पूरी तरह उसी के कंधो पर डाल दी जाती है।

महिलाओं का कार्यक्षेत्र भी यहां दो हिस्सों में बट जाता है, ऑफिस और घर। दोनो ही जगह उनसे सौ प्रतिशत प्रदर्शन की उम्मीद रखी जाती है। ऐसे में निजी जीवन सबसे ज्यादा प्रभावित होता है। समय रेत की तरह सरक जाता है और अगले दिन का सूरज फिर से उसी नई शुरूआत की ओर इशारा करने लगता है। कामकाजी और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन न बना पाने के चलते अकसर महिलाए परेशान रहती है। लेकिन ऐसा कब तक चलेगा? इस संतुलन को हासिल करने के लिए आपको खुद ही प्रयास करने होगे।

प्राथमिकताएं तय करे – हम सभी के पास दिन के चौबीस घंटे ही होते है। इन्ही में हमको घर, बाहर और व्यक्तिगत जीवन की जिम्मेदारियां भी पूरी करनी होती है। इसकी तारतम्यता कई दफा सिर्फ इस बात पर बिगड़ जाती हैं किं हम अपने कार्यो की प्राथमिकताएं नही तय कर पाते है। कार्यो को अस्त व्यस्त तरीके से करने के कारण हम उनमें ही उलझे रह जाते है और खुद के लिए समय नही निकाल पाते है। इसका एक नुकसान यह भी होता हैं किं हमारे काम का परिणाम प्रभावित होने लगता है। कार्यो का व्यवस्थित तरीके से करने के लिए जरूरी हैं कि उनकी प्राथमिकताए तय की जाएं। ऐसा घर और ऑफिस दोनों ही जगह करना चाहिए। मान लीजिए, अधिक प्राथमिकता वाले कार्य को करने के बीच कोई दूसरा काम अचानक आ जाता है, तो उसे कुछ देर के लिए टाल भी सकती है।

विभाजान की प्रक्रिया अपनाएं – यहां विभाजन समय का करना है, जो कि ऑफिस के अनुरूप होगा। ऑफिस के समय पूर्ण रूप से वही के कार्यो पर ध्यान दें। इस बीच बच्चो की फिक्र होती है, तो एक या दो बार हालचाल ले लें। हर वक्त घर की फिक्र न करती रहें। ऑफिस में घर की बातें और समस्याओं की चर्चा न ही करें। जितना समय घर की जिम्मेदारीयों को पूरा करने के लिए देती है, उस दौरान अपने व्यावसायिक कार्यो से दूरी बनाकर रखें। ऐसा करना आपको मानसिक तनाव से दूर रखेगा और साथ ही आपके काम भी समय पर पूरे ही जाएंगे। ऐसा करके आप खुद के लिए भी थोड़ा समय निकाल पाएगी।

काम को बांटना सीखें – जरूरी नहीं हैं किं काम की जिम्मेदारी आप खुद लें। आप छोटे–छोटे कामों को अलग–अलग लोगों में बांट कर पूरा कर सकती है। पति, दोस्त, बच्चे या घर के अन्य सदस्यों के साथ एक टीम की तरह काम करें। इससे समय रहते आपके सारे काम पूरे तो होंगे ही, साथ ही काम का दबाव आप पर कम पड़ेगा और आपका मिजाज खुशनुमा बना रहेगा।

सबको खुश रखना संभव नहीं – कुछ आप मिसेज परफेक्ट बनने की कोशिश तो नही करती? अगर हॉ, तो क्यों? एक बात समझ लीजिए, परफेक्ट कुछ भी नही होता। हर कार्य में किसी–न–किसी के हिसाब से कोई कमी रह ही जाती है और एक समय में सबको खुश करना भी मुमकिन नही है। इस कवायद में आप सिर्फ खुद को नुकसान पहुँचाती है। खुद पर काम को परफेक्ट तरीके से करने का दवाब कम डाले।

व्यायाम को महत्व दें – महिलाओं के अधिकतर काम बैठकर करने वाले होते है। ऐसे मे शारीरीक गतिविधियां कम ही हो पाती है और थकान ज्यादा महसूस होती है। दिन में किसी भी वक्त व्यायाम के लिए समयय निकालें। इसके लिए जरूरी नही है किं आप जिम ही जाए। घर पर हल्की स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज कर सकती है या फिर कुछ देर के लिए टहलना भी फायदेमंद हो सकता है। इससे शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है और दिन भर आप ऊर्जावान महसूस करेंगी।

जिम्मेदारीयों के अनरूप कार्य चुनें – यकीनन आप कामकाजी है, लेकिन काम का स्वभाव आपकी जिम्मेदारियों के अनुरूप रहे तो बेहतर रहेगा। जैसे अगर आपके बच्चे बहुत छोटे है, तो आप पर उनकी जिम्मेदारियां अधिक होगी। ऐसे में आठ घंटे की नौकरी आपके लिए उपयुक्त नही होगी, क्योंकि घर पर बच्चे को भी समय देना होता है। इसलिए ऐसी नौकरी करे, जिसमें काम के घंटो को लेकर थोड़ा लचीलापन मिल सकें।

दोस्त भी है जरूरी – दोस्त, सिर्फ मौज–मस्ती के लिए ही नही होते, बल्कि कई बार तो वे संकटमोचन भी बन जाते है। ज्यादातर महिलाओं की समस्या घरेलू होती है यानी उन्हे काम का दबाव उतना परेशान नही करता, जितना घरवालो का रवैया। और अगर अपनी समस्याओं को घर के किसी सदस्य से साझा किया भी जाए, तो उनकी प्रतिक्रिया एकतरफा ही होती है। इस स्थिति में आपके दोस्त ही काम आते है। अपने दोस्तों या जान–पहचान वालों में अपने से बड़ी उम्र के लोगो को अपनी समस्या में आपकें दोस्त ही काम आते है। अपनें दोस्तों या जान–पहचान वालों में अपनें से बड़ी उम्र के लोगो को अपनी समस्या साझा करें। उनके अनुभव आपको जीवन का रास्ता दिखा सकते है।

MOIL को मिला इस्पात राजभाषा सम्मान पुरस्कार

■ नागपुर, व्यापार संवाददाता. इस्पात मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक केंद्रीय इस्पात मंत्री रामचंद्र प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में मदुरै, तमिलनाडु में हुई. बैठक के उपाध्यक्ष, इस्पात और ग्रामीण विकास राज्य मंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते भी इस अवसर पर उपस्थित थे. रामचंद्र प्रसाद सिंह ने मॉयल को राजभाषा के प्रयोग में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए वर्ष 2018-19, 2019-20 के लिए 'इस्पात राजभाषा सम्मान' पुरस्कार से सम्मानित किया. मॉयल के सीएमडी मुकुंद पी चौधरी और निदेशक मानव संसाधन ऊषा सिंह को मॉयल के

प्रदर्शन और हिंदी भाषा के उपयोग में योगदा के लिए सम्मानित किया गया. समिति ने हिं की प्रगति की विस्तार से समीक्षा की औ कार्यालय कार्यों में हिंदी के प्रगतिशील उपयो को बढ़ावा देने के लिए मॉयल के प्रयासों व सराहना की.

समाज में महिलाओं की भूमिका

हमारे समाज में महिला अपने जन्म से लेकर म्रत्यु तक एक अहम किरदार निभाती है। अपनी सभी भूमिकाओं में निपुर्णता दर्षाने के बावजूद आज के आधुनिक युग में महिला पुरूष से पीछे खडी दिखाई देती है। पुरूश प्रधान समाज में महिला की योग्यता को आदमी से कम देखा जाता है। सरकार द्वारा जागरूकता फैलाने वाला कई कार्यक्रम चलाने के बावजूद महिला की जिदंगी पुरूष की जिदंगी के मुकाबले काफी जटिल हो गयी है। महिला कों अपनी जिदंगी का ख्याल तो रखना ही पडता है। साथ में पुरे परिवार का ध्यान भी रखना पडता है। वह पुरी जिदंगी बेटी, बहन, पत्नी, मॉ, सास और दादी जैसे रिश्तों को ईमानदार से निभाती है। इन सभी रिश्तों को निभाने के बाद भी वह पुरी शक्ति से नौकरी करती है। ताकि अपना परिवार का और देश का भविष्य उज्जवल बना सके।

अगर हम महिलाओं की आज की अवस्था को पौराणिक समाज की स्थिति से तुलना करे तो यह तो साफ दिखता है कि हालात में कुछ तो सुधार हुआ है। महिलाएं नौकरी करने लगी है। घर के खर्चो में योगदान देने लगी है। कई क्षेत्रो में तो महिला पुरूषों से आगे निकल गई है। दिन प्रतिदिन लडकियां ऐसे –ऐसे कीर्तिमान बना रही है। जिस पर न सिर्फ परिवार या समाज को बल्कि पूरा देश गर्व महसुस कर रहा है।

महिलाओं के उत्यान में भारत सरकार भी पीछे नही है। बीते कुछ सालों में सरकार द्वारा अनगिनत योजनाऍ चलाई गयी है। जो महिलाओं को समाजिक बेडियॉ तोडने में मदत कर रही है। तथा साथ ही उन्हे आगे बडने में प्रेरित कर रही है। सरकार ने पुराने वक्त के प्रचलनों को बंद करने के साथ–साथ उन पर कानूनन रोक लगा दी है जिनमें मुख्य थे बाल विवाह, भ्रुण हत्या, दहेज प्रथा दृबाल मजदूर .घरेलू हिंसा आदि। इन सभी का कानूनी रूप से प्रतिबंध लगाने के बाद समाज में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार आया है।

महिलाओं के उत्थान में भारत सरकार भी पीछे नही है। बीते कुछ सालों में सरकार द्वारा अनगिनत योजनाऍ चलाई गयी है जो महिलाओं को सामाजिक बेडियॉ तोडने में मदद कर रही है तथा साथ उन्हे आगे बढनें में प्रेरित कर रही है। सरकार ने पुराने वक्त के प्रचलनों को बंद करने के साथ–साथ उन पर कानुनन रोक लगा दी है जिनमे मुख्य ये बाल विवाह भ्रुण हत्या, दहेज प्रथा, बाल मजदुरी, घरेलु हिसां आदि। इन सभी को कानुनन रूप से प्रतिबंध लगाने के बाद समाज में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार आया है। महिला अपनी पुरी जिंदगी अलग–अलग रिष्तो में खुद को बॉधकर दुसरो की भलाई के लिए काम करती है। हमने आज तक महिला को बहन, मॉ, पत्नी, बेटी आदि विभिन्न रूपों में देखा है। जो हर वक्त परिवार के मान सम्मान को बढाने के लिए तैयार रहती है। शहरी क्षेत्रों में तो फिर भी हालात इतने खराब पही है। पर ग्रामिण इलाको में महिला की व्यवस्था न होने के कारण महिलाओं की दशा दयनीक हो गई है। एक औरत बच्चे को जन्म देति है और पुरी जिदंगी उस बच्चे के प्रति अपना सारी जिम्मेदारियो कों निभाती है।

– गितु पटले

मॉयल में एक दिवसीय समझाईश कार्यक्रम आयोजित

बालाघाट (जबलपुर एक्सप्रेस)।

मॉयल लिमिटेड, बालाघाट खान में कार्यरत कामगार एवं कर्मचारियों के लिय 24 फरवरी को मॉयल भरवेली सभागृह में एक दिवसीय समझाइश कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य मॉयल लिमिटेड, बालाघाट खान में कार्यरत कामगार एवं कर्मचारियों की अनुपस्थिति की रोकथाम व नशा-मुक्त जीवन के लिये समझाइश देना था। जिसमें मुख्य रूप से मॉयल लिमिटेड, बालाघाट खान के खान प्रबंधक निलेश खेड़ेकर, डॉ. अशफाक खान-मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डॉ. विशेष नाग-चिकित्सा अधिकारी, असीम शेख -कार्मिक अधिकारी, दिनेशगेडाम-कनि. कल्याणअधिकारी, अंकित लालवानी-प्रबंधक (कल्याण/कार्मिक), भरवेली थाना के ए.एस.आई मनोज सिंह, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के राज्य स्तरीय समन्वय एजेंसी जिला नशामुक्ति संगठन, बालाघाट के निदेशक धनेन्द्र हनवत तथा अरूण राहंगडाले व मनोज क्षीरसागर, सांसद प्रतिनिधि, मॉयल कामगार संगठन के

गया एवं निर्देशित किया गया कि इस प्रकार की बुरी आदत से बचे एवं अपने परिवार व स्वयं के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। जिसके उपरांत डॉ. अशफाक खान व डॉ. विशेष नाग द्वारा खान स्तर पर प्रदान की जाने वाली

साथ-साथ अपने परिवार को भी इस बुरी आदत से बचा नहीं पायेंगे। तथा प्रबंधन द्वारा निःशुल्क प्रदान की मेडिकल सुविधा के लिये किये जाने वाले खर्च व्यर्थ हो जायेंगे। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी बताया कि

नशामुक्त रहने तथा नशा पीड़ित दोस्तों को उपचार के लिये प्रेरित करने की प्रेरणा दी गई। मॉयल कामगार संगठन के यूनियन प्रतिनिधियों द्वारा भी इस समझाइश कार्यक्रम में कामगारों को नये वेतन समझौते के बाद मिलने वाले लाभ के लिये ड्यूटी पर अच्छी उपस्थिति देने के लिये प्रेरित किया गया तथा अनुपस्थित नहीं रहने की सलाह दी गई।

असीम शेख, दिनेश गेडाम एवं अंकित लालवानी द्वारा अनुपस्थिति की रोकथाम हेतु कंपनी के स्थायी आदेश में कृत्यों के सबंध में जानकारी प्रदान की गई तथा लघु एवं दीर्घ कदाचारों के लिये अनुशासन संबंधी प्राधिकारी द्वारा दंडित किये जाने वाले प्रावधानों के संबंध में जानकारी प्रदान की गई एवं परिवार परामर्श किया गया। जहां उन्हें सलाह दी गई कि यदि वे कार्य पर अच्छी उपस्थिति देते है एवं बुरी आदतों से बचते है तो वे अपने परिवार के साथ खुशहाल व निरोगी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। एवं उद्योग की उन्नति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

अंत में कार्यक्रम के अध्यक्ष निलेश खेडेकर द्वारा

Meeting of Hindi Salahkar Samiti

Committee of Ministry
3rd March 2022
मॉयल
MOIL

मदुरै, 3 मार्च

Meeting of Hindi Advisory
Limited

मॉयल लिमिटेड
नागपुर
मॉयल
MOIL

मॉयल
MOIL

मॉयल लिमिटेड
नागपुर

मॉयल
MOIL

इस्पात मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक
मदुरै, 3 मार्च 2022
Meeting of Hindi Advisory Committee of Ministry of Steel

14 वीं छमाही
परस्कार वितरण

14 वीं छमाही

मॉयल का गौरवगान

दिनेश कनोजे देहाती
चार्जहैंड मेकेनिकल
तिरोड़ी खान

सफलता के शिखर पर हमारा उत्कर्ष,
मॉयल ने पूरे किए आज अपने साठ वर्ष।

निरंतर प्रगति एवं उन्नत विचारधारा,
श्रेष्ठता का शिखर ही है लक्ष्य हमारा।
उत्पादन उच्चतम और श्रेष्ठ जीवन भी,
मुस्कुराते श्रमिक एवं परिवार सभी,
सागर की लहरों से हिमालय का स्पर्श।
मॉयल ने पूरे किए आज अपने साठ वर्ष।

सुरक्षित उत्खनन और आधुनिक प्रणाली,
विकास की दिशा में इतिहास गौरवशाली,
पर्यावरण मित्र हैं हम रखते हरियाली,
हरे भरे वृक्ष सदा देते हैं खुशहाली।
हर्षित हर हृदय और समर्पण सहर्ष।
मॉयल ने पूरे किए आज अपने साठ वर्ष।

उच्चतम उन्नति का है हमें विश्वास,
प्रतिष्ठा पहचान पुरस्कार हमारे पास,
राजभाषा, सुरक्षा, संरक्षण के नाम,
हमने जीते हैं अनेक राष्ट्रीय इनाम।
इस्पात को मजबूत बनाए, यही निष्कर्ष।
मॉयल ने पूरे किए आज अपने साठ वर्ष।

नागपूर में जगमगाता मुख्यालय भवन,
नीला सागर सा गहरा मानो नील गगन।
10 खदाने हमारी उगलती है काला सोना,
राष्ट्रीय योगदान बस ऐसा ही होना।
इतिहास रचते जाएं नित नये वर्ष।
मॉयल ने पूरे किए अपने आज साठ वर्ष।।

मॉयल लिमिटेड

(भारत सरकार की अनुसूची "ए" की मिलिरल श्रेणी–1 की कंपनी)

स्थापना से कालक्रमिक विकास की झलक

वर्ष (ईस्वी)	गतिविधि/उपलब्धि		गतिविधि/उपलब्धि
1962	हमारी कंपनी का समावेश 1962 के समझौते के अनुसार नागपुर, डोंगरी बुजुर्ग और अन्य क्षेत्रों सीपीएमओ से मैंगनीज के लिए खनन पट्टे का हस्तांतरण।	2006	4.8 मीटर की पवन फार्म की व्यापक विद्युत उत्पादन क्षमता चालू की गई।
1977	सीपीएमओ द्वारा भारत सरकार को पूरी हिस्सेदारी का हस्तांतरण और हमारी कंपनी 100% सरकारी स्वामित्व वाली कंपनी बन गई।	2007	उपलब्धि 1 लाख टन का वार्षिक उत्पादन तथा बालाघाट खदान में एकीकृत मैंगनीज बेनीफिकेशन प्लांट को स्थापित किया।
1991	डोंगरी बुजुर्ग खदान में ईएमडी प्लांट स्थापित।	2008	15.2 मेगावाट की बिजली उत्पादन क्षमता वाला दूसरा पवन फार्म चालू किया गया। मिनीरत्न श्रेणी का दर्जा। हिन्दी में किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए इस्पात राजभाषा ट्रॉफी से सम्मानित।
1993	कॉरपोरेट प्रदर्शन में उत्कृष्टता के लिए हार्वर्ड बिजनेस स्कूल एसोसिएशन ऑफ इंडिया अवार्ड्स को इकोनॉमिक टाइम्स से सम्मानित।	2009	1000 करोड़ से अधिक का वार्षिक कारोबार हासिल किया । पुरस्कार: प्रमाण और मान्यता भी प्राप्त किया।
1998	बालाघाट खदान में 10,000 TPY की क्षमता के साथ उच्च कार्बन फेरो मैंगनीज संयंत्र स्थापित।	2010	2010–11 वित्तीय वर्ष के दौरान कंपनी का नाम मैंगनीज ओर (इंडिया) लिमिटेड से मॉयल लिमिटेड में बदल दिया गया।
2000	भारी उद्योग और सार्वजनिक उद्यम मंत्रालय और सार्वजनिक उद्यम विभाग द्वारा वर्ष 1998–99 के लिए समझौता ज्ञापन लक्ष्यों की उपलब्धि में उत्कृष्टता के लिए सर्टिफिकेट मिला।	2013	मॉयल को महाराष्ट्र सरकार से 597.44 हेक्टयर क्षेत्र का पूर्वेक्षण लाइसेंस मिला।
2002	कंपनी को शेड्यूल बी का दर्जा मिला	2014	मॉयल एक अनुसूची "ए" मिनीरत्न श्रेणी–1 की कंपनी। महाराष्ट्र सरकार द्वारा नागपुर और भंडारा जिले में 597.44 हेक्टेयर क्षेत्र में पूर्वेक्षण लाइसेंस (पीएल) के अनुदान को निष्पादित किया।
2004	भारी उद्योग और सार्वजनिक उद्यम मंत्रालय और सार्वजनिक उद्यम विभाग द्वारा वर्ष 2002–03 के लिए समझौता ज्ञापन लक्ष्यों की उपलब्धि में उत्कृष्टता के लिए सर्टिफिकेट मिला।	2015	मॉयल को नई खदान की भूमि क्रय हेतु पर्यावरण स्वीकृति मिली।
2005	प्रथम पुरस्कार: भारत सरकार द्वारा डोंगरी बुजुर्ग खदान में हमारी कंपनी के इलेक्ट्रोलिटिक मैंगनीज डायऑक्साइड संयंत्र को रासायनिक क्षेत्र में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार प्रदत्त किया।	2016	मॉयल लिमिटेड ने मध्य प्रदेश सरकार के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मॉयल लिमिटेड, आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर अमर बलिदानी क्रांतिकारियों को नमन करता है। देश की मिनिरत्न श्रेणी-१ कंपनी के रूप में कंपनी ने राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कंपनी के खनिज उत्पाद उच्चमानक और उच्चगुणवत्ता वाले हैं। कंपनी ने अपने अविर्भाव काल से ही निरंतर प्रगतिशील है। स्वतंत्र राष्ट्र की संप्रभुता को अक्षुण्ण रखने एवं इसके सबल समृद्ध और शक्तिशाली बनाने के लिए हम कृत संकल्प हैं।

मॉयल
MOIL

जय हिंद!